श्रीमद्भगवद्गीता की यथावत सुबोध व्याख्या

भाग- २
कक्षा ६ से १० तक

बाल गीता

विश्व के सभी विद्यार्थियों के लिये

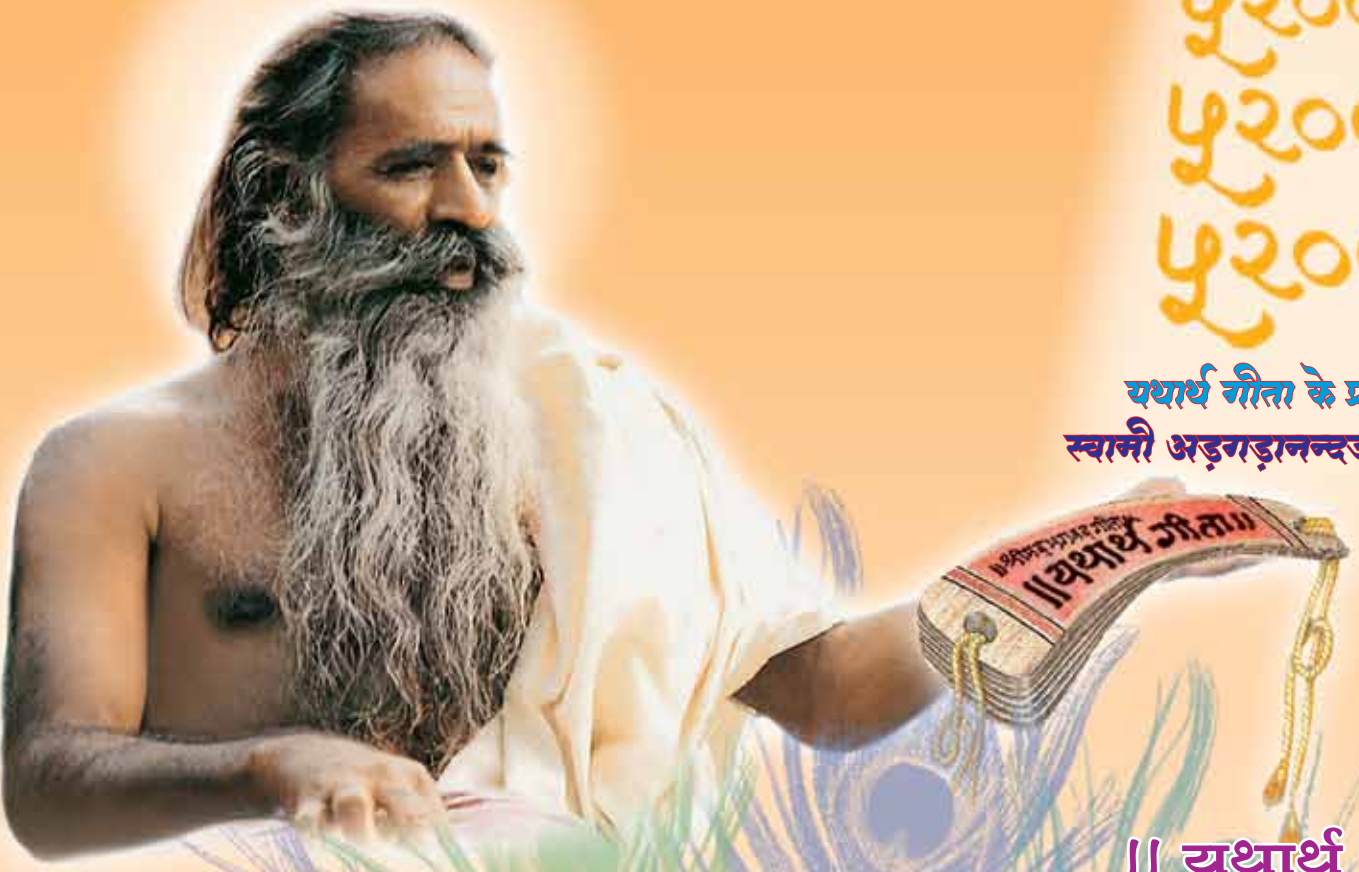

यथार्थ गीता के प्रणेता-
स्वामी अड़गड़ानन्दजी महाराज

॥ यथार्थ गीता ॥
मानवमात्र का एकमात्र धर्मशास्त्र

बच्चे व सब छात्र – गीता के सच्चे पात्र

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार

मूल्य – रु. ७४.००/- मात्र

।। ॐ श्री सद्गुरुदेवाय नमः ।।

भाग– २
कक्षा ६ से १० तक

बाल गीता

विश्व के सभी विद्यार्थियों के लिये

बच्चों के संस्कारवर्द्धन हेतु
पूज्य स्वामी श्री अड़गड़ानन्दजी महाराज
के श्रीमुख से निःसृत
शिक्षाप्रद अमृतवाणियों का संकलन

*** बच्चे व सब छात्र – गीता के सच्चे पात्र ***

प्रकाशक :
श्री परमहंस स्वामी अड़गड़ानन्दजी आश्रम ट्रस्ट
5, New Apollo Estate, Mogra Lane, Opp. Nagardas Road,
Andheri (East), Mumbai – 400069 India

प्रकाशकीय निवेदन

श्री गुरु पूर्णिमा पर्व, वर्ष १९८३ में ईश्वरीय प्रेरणा से प्रकट 'यथार्थ गीता' को केवल भारत ही नहीं वरन् पूरा विश्व स्वीकार कर रहा है। करोड़ों लोग इस यथार्थ ज्ञान से आप्लावित हो रहे हैं। इसी क्रम में शिक्षकवृन्द, अभिभावकगण और भाविकों के आग्रह पर, पूज्य स्वामी जी की प्रेरणा से विद्यार्थियों के लिये गीता-ज्ञान की इस पुस्तिका का प्रकाशन किया गया है जो कि भारत ही नहीं, पूरे विश्व के भावी नागरिकों को सम्बोधित है।

वस्तुतः 'गीता' में प्रयुक्त शब्द यौगिक शब्द हैं। उनका अपना एक अभिप्राय है, आकर्षण है। उनको तो बदला नहीं जा सकता; हाँ! उन्हें सरल, सुबोध रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

आशा है, सभी माता-पिता, अभिभावक एवं शिक्षकवृन्द अपने बच्चों एवं विद्यार्थियों को ईश्वरीय गायन 'गीता' से परिचित करायेंगे। उनके प्रश्नों एवं जिज्ञासाओं का समाधान करेंगे, जिससे उनमें श्रेष्ठ संस्कारों का सृजन होगा, उनके पुण्य-पुरुषार्थ में वृद्धि होगी और वे जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे।

आप लोगों से अपेक्षा है कि यह पुस्तिका और 'यथार्थ गीता' प्रत्येक घर, विद्यालय, पुस्तकालय और प्रत्येक विद्यार्थी के बस्ते में होनी चाहिये। वस्तुतः तमाम रूढ़ियों, अन्धविश्वासों एवं पूर्वाग्रहों से मुक्त बच्चे ही गीता के सच्चे पात्र हैं।

इसके लिये आपलोग नियम बनायेंगे कि सब विद्यार्थी –

- प्रतिदिन सुबह या शाम 'यथार्थ गीता' के चार श्लोकों का अर्थसहित सस्वर पाठ करेंगे।
- प्रति सप्ताह एक श्लोक कण्ठस्थ (याद) करेंगे।
- प्रति सप्ताह एक 'गीता अभ्यास पुस्तिका' में तीन श्लोक हाथ से लिखकर लायेंगे।
- प्रति सप्ताह एक घण्टे का 'ज्ञानगोष्ठी' का आयोजन कर 'यथार्थ गीता' के श्लोकों का अर्थसहित सामूहिक सस्वर पाठ और परिचर्चा करेंगे। शिक्षकवृन्द एवं अभिभावकगण उनके जिज्ञासाओं का समाधान करेंगे।

इस पुस्तिका को बच्चों के जन्मोत्सव, मांगलिक आयोजनों और विद्यालयों में मुक्तहस्त वितरित करें। इससे बच्चों का संस्कारवर्द्धन तो होगा ही, साथ ही आपका भी कल्याण होगा।

आपके सभी बच्चों और विद्यार्थियों को प्रकाशकीय शुभकामनाएँ!

–प्रकाशक

सम्बोधन

विश्व का आदि धर्मशास्त्र – श्रीमद्भगवद्गीता

प्रिय बच्चो!

आप जानना चाहेंगे कि गीता का प्राकट्य कहाँ हुआ! सम्पूर्ण विश्व को एक जैसी शान्ति, समृद्धि, सम्प्रदाय एवं भेदभावमुक्त भातृत्व-स्नेह-सम्मान और परमपद प्रदायिनी 'गीता' की उत्पत्ति भारत में हुई है।

सृष्टि के आरम्भ में, करोड़ों वर्ष पूर्व हिमालय की तपस्थली में भगवान नारायण ने इसे सूर्य से कहा। सूर्य से आदि महाराजा मनु को प्राप्त हुआ। मनु ने इक्ष्वाकु से कहा और इक्ष्वाकु से राजर्षियों ने जाना। इस महत्वपूर्ण काल से यह अविनाशी योग इसी लोक में लुप्त हो चला था। अविनाशी का विनाश तो होता नहीं, स्मृति धूमिल हो गयी थी। जिसे भगवान श्रीकृष्ण ने द्वापर में महाभारत वर्णित कुरुक्षेत्र की रणभूमि में अपने सखा-मित्र-शिष्य अर्जुन के प्रति कहा।

बच्चो! काल-क्रम के अन्तराल से वही आदिशास्त्र गीता आज अपने मूल आशय के साथ सुरक्षित आपके समक्ष है, हाथों में है। इस अनुपम, दुर्लभ शास्त्र का जन्म-स्थान भारत ही है। इसलिये यह भारत का राष्ट्रीय दर्शन (ग्रन्थ) और विश्व के मानव-मात्र को सम्बोधित होने से अन्तर्राष्ट्रीय ग्रन्थ है।

अतः अनादिकाल से उस एक परमपिता परमात्मा का दर्शन और उसको धारण कराने के विधि-विधानों से युक्त श्रीमद्भगवद्गीता ही विश्व का आदि धर्मशास्त्र है। जो उन्हीं परमात्मा के श्रीमुख का सीधा प्रसारण है।

सुख, शान्ति, समृद्धि एवं सफलता की साधना गीता!

स्वामी श्री अड़गड़ानन्द जी महाराज

विवरण-सूची

	विषय	पृष्ठ संख्या
१.	प्रार्थना	१
२.	वन्दना	३
३.	आशीर्वचन	४
४.	विश्वविश्रुत (विश्वविख्यात) गीता पर विद्वानों के विचार	६
५.	'गीता' और भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन	९
६.	'गीता' पर राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के विचार	१०
७.	ज्ञानामृत गीता का प्रादुर्भाव – महाभारत कथा	११
८.	सत्य सनातन उद्‌बोधन	१७
९.	विश्व का आदि धर्मशास्त्र – श्रीमद्भगवद्गीता	२१
१०.	'गीता' की यथावत् सुबोध हिन्दी व्याख्या 'यथार्थ गीता'	२४
११.	'गीता' – महिमा गान	२६
१२.	धर्म, धर्मशास्त्र और धर्मसिद्धान्त	२७
१३.	विद्यार्थियों के कर्त्तव्य	३६
१४.	सफलता, समृद्धि एवं साधना के सूत्र	३८
१५.	ब्रह्मचर्य का पालन करें	४१
१६.	आत्मोन्नति की स्वर्णिम सूक्तियाँ	४३
१७.	गुरु महिमा एवं गुरु शिष्य परम्परा	४४
१८.	गौरवशाली इतिहास ग्रन्थ 'महाभारत'	४५
१९.	'महाभारत' व 'गीता' के शिक्षाप्रद प्रेरक प्रसंग –	
	❑ गीता का नियमित अध्ययन और श्रवण करें	४९
	❑ अभिमानी नहीं होना चाहिये	५०
	❑ ब्रह्मचर्य में असीम शक्ति है	५२
	❑ धर्म ही सफलता की कुंजी है	५४
	❑ भगवान् के संरक्षण में सब कुछ प्राप्त होता है	५६
२०.	'यथार्थ गीता' के प्रणेता	५८

॥ ॐ ॥

ॐ की महिमा

ॐ नाम के साबुन से, जो मन का मैल छुड़ायेगा।
निर्मल मन के मंदिर में, भगवान् का दर्शन पायेगा।।

ओम् के उच्चारण से मन शान्त होता है और शक्ति, साहस, सामर्थ्य का सञ्चार होता है। परमदेव परमात्मा के निकटता की अनुभूति होती है।

- निराशा, असफलता एवं विपत्ति में इष्ट का ध्यान और ॐ का जप करें।

* * *

गीता-महिमा

गीतायाः श्लोकपाठेन गोविन्दस्मृतिकीर्तनात्।
साधुदर्शनामात्रेण तीर्थकोटिफलं लभेत्।।

गीता के श्लोक के पाठ से, भगवान् श्रीकृष्ण के स्मरण और भजन (ओम् के जप) से तथा सन्त के दर्शनमात्र से करोड़ों तीर्थों का फल प्राप्त होता है।

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

॥ ॐ श्री परमात्मने नमः ॥

प्रार्थना

हे प्रभो ! आनन्ददाता !

हे प्रभो! आनन्ददाता! ज्ञान हमको दीजिये ।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हमसे कीजिये ॥
लीजिये हमको शरण में, हम सदाचारी बनें ।
ब्रह्मचारी, धर्मरक्षक, वीर व्रतधारी बनें ॥
निन्दा किसी की हम किसी से, भूलकर भी ना करें ।
ईर्ष्या कभी भी हम किसी से, भूलकर भी ना करें ॥
सत्य बोलें झूठ त्यागें, मेल आपस में करें ।
दिव्य जीवन हो हमारा, यश तेरा गाया करें ॥
मातृभूमि पितु-मातु सेवा, हो अधिक प्यारी हमें ।
देश की सेवा करें, निज देश हितकारी बनें ॥
कीजिये हम पर कृपा, ऐसी हे परमात्मा ।
मोह मद मत्सर रहित, होवे हमारी आत्मा ॥
प्रेम से हम गुरुजनों की, नित्य ही सेवा करें ।
प्रेम से परमात्मन्! हम आपका चिन्तन करें ॥
योगविद्या ब्रह्मविद्या, हो अधिक प्यारी हमें ।
ब्रह्मस्थिति प्राप्त करके, सर्वहितकारी बनें ॥

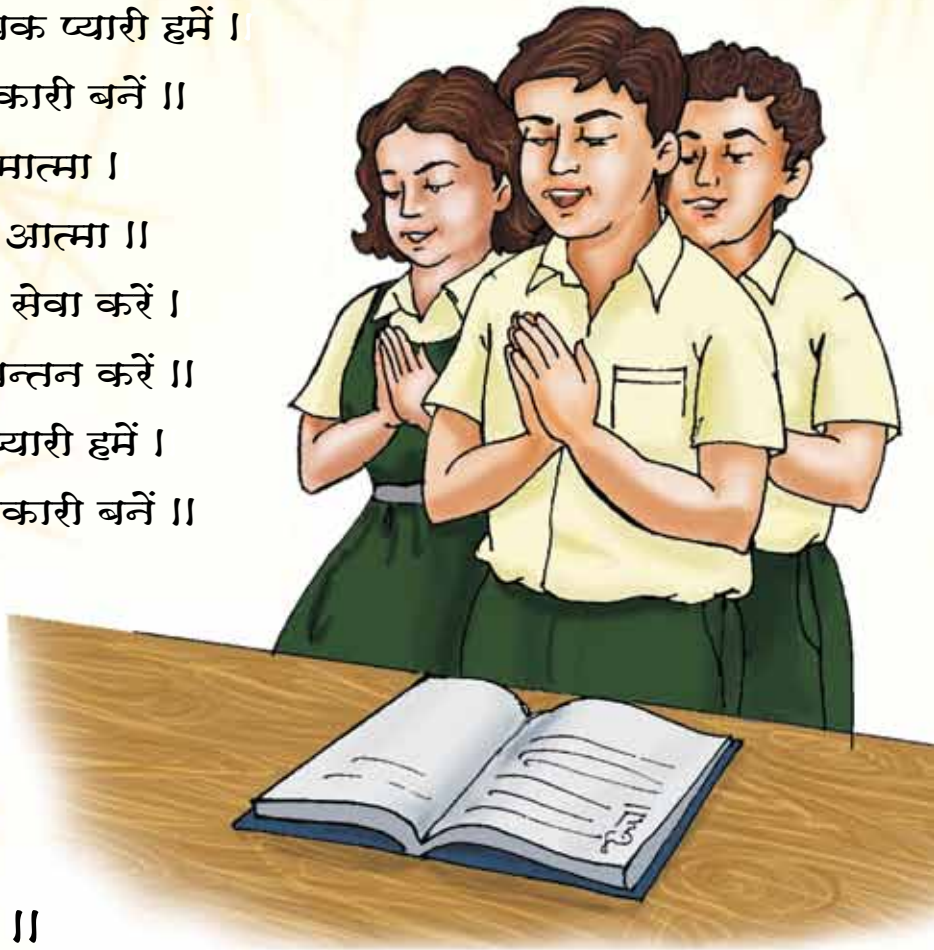

॥ ॐ ॥

वन्दना

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देवदेव।।

अर्थ– तुम ही माता हो, तुम ही पिता हो, तुम ही बन्धु हो, तुम ही सखा हो, तुम ही विद्या हो, तुम ही शक्ति (सामर्थ्य) हो। हे देवों के देव! सद्गुरुदेव! तुम ही मेरे सबकुछ हो।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

अर्थ– गुरु ही ब्रह्मा हैं (सृष्टि के रचयिता हैं), गुरु ही विष्णु हैं (विश्व के अणु-अणु, कण-कण में व्याप्त हैं), गुरु ही महेश्वर हैं (महान् ईश्वर, परमात्मा हैं) तथा गुरु ही साक्षात् साकार ब्रह्मस्वरूप हैं अर्थात् इन सबकी उपलब्धि का साधन-माध्यम (जागृति) सद्गुरु से ही है। मैं उन गुरुदेव को नमस्कार करता हूँ।

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोर्पदम्।
मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोर्कृपा।।

अर्थ– गुरु के स्वरूप का ही ध्यान, गुरु के श्रीचरणों की पूजा, गुरु के श्रीमुख से निकले हुए वचन ही मन्त्र हैं तथा गुरु की कृपा ही मोक्ष का आधार है।

आशीर्वचन

प्रिय विद्यार्थियो!

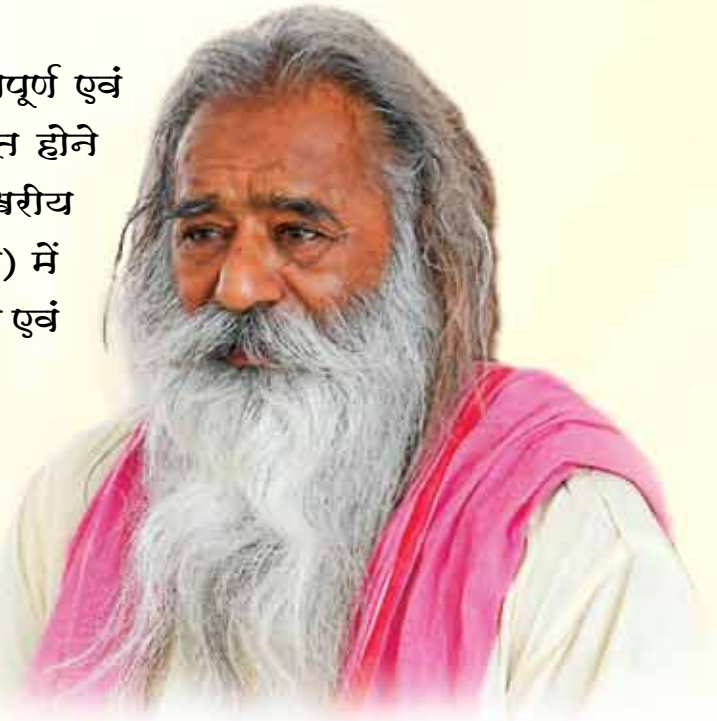

आपलोगों के जीवन का यह सबसे महत्त्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक क्षण है कि आप 'गीता' से परिचित होने जा रहे हैं। 'गीता' ज्ञान का सागर है और ईश्वरीय गायन का आदिशास्त्र है। सृष्टि के आदि (प्रारम्भ) में प्रसारित गीताज्ञान विश्व मानवता की सबसे प्रथम एवं प्राचीनतम अमूल्य निधि है।

अनादिकाल से इसने सत्यान्वेषियों (सत्य की खोज में अनुरक्त) एवं जिज्ञासुओं के सभी प्रश्नों का समाधान किया है और आज भी कर रही है। आपलोगों के भी मस्तिष्क में उमड़नेवाले प्रश्न, जैसे– इस सृष्टि का निर्माण कैसे हुआ? इसका निर्माणकर्त्ता कौन है? मेरे जन्म और जीवन का उद्देश्य क्या है? आदि जीव-जगत्, ब्रह्माण्ड एवं अध्यात्म से सम्बन्धित सभी जिज्ञासाओं व प्रश्नों के उत्तर 'गीता' में हैं।

आर्यावर्त भारत से उदित होकर पूरे विश्व को आलोकित करनेवाली 'गीता' भारत का गौरव है। विश्व की प्रथम एवं प्राचीनतम सभ्यता, भारतीय संस्कृति, दर्शन एवं अध्यात्म ने पूरे विश्व को प्रभावित एवं आकर्षित किया है; इसलिए भारत को 'विश्वगुरु' माना जाता है।

'गीता' विश्व-दर्शन है। सृष्टि के प्रारम्भ से प्रसारित इस अविनाशी योग, योगेश्वर श्रीकृष्ण की वाणी को ५२०० वर्ष पूर्व महर्षि वेदव्यास ने लिपिबद्ध कर 'श्रीमद्भगवद्गीता' शास्त्र का स्वरूप प्रदान किया। गीता की ही देन है कि 'सत्य' केवल एक ईश्वर, आत्मा या परमात्मा है। वर्तमान में तीन-साढ़े तीन हजार वर्षों से प्रचलित विश्व के सभी मत, पन्थ एवं सम्प्रदायों में गीता के ही एक ईश्वरवाद का प्रवाह मिलता है। विश्व के सभी महापुरुष एक हैं और सभी ने एक ईश्वर और उसकी प्राप्ति के धर्म-सिद्धान्तों को अपने-अपने देश-काल की भाषाओं में समझाया है। कोई भी महापुरुष समाज में दरार नहीं डालते। हाँ! महापुरुष के न रहने पर उसके पीछे संगठित समाज द्वारा दरारें डाल दी जाती हैं। वस्तुतः ईश्वर एक है, एक से दो हो ही नहीं सकता। अगर दो है तो उसके व्याप्त होने के लिए दूसरी सृष्टि चाहिए।

प्रिय बच्चो! सृष्टि के प्रारम्भ से प्रसारित गीता एक सार्वकालिक (सभी समयों में उपयुक्त), सार्वलौकिक (सारे संसार में व्याप्त) और सार्वजनीन (सबके लिये) उपयुक्त मानव-शास्त्र है। उस एक परमात्मा को धारण करने की विधि-विधानों की ईश्वरीय वाणी का संकलन होने से मानवमात्र का धर्मशास्त्र है। सृष्टि के आदि से प्रसारित है, इसलिए मानवमात्र का आदि धर्मशास्त्र है।

कालान्तर अर्थात् समय के अन्तराल से 'गीता' का मूल आशय खो गया था। ५२०० वर्षों बाद योगेश्वर श्रीकृष्ण के आशय को यथावत् (ज्यों-का-त्यों) 'यथार्थ गीता' में प्रस्तुत किया गया है। 'यथार्थ गीता' के प्रसारण से धर्म और धर्म के नाम पर पनपी सभी कुरीतियों, रूढ़ियों एवं अन्धविश्वासों का समाधान करते हुए ईश्वरप्राप्ति के समग्र साधन-विधि को पुनर्प्रकाशित किया गया है। 'यथार्थ गीता' के आलोक में केवल भारत ही नहीं, बल्कि विश्व की सभी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत है। सम्पूर्ण जानकारी के लिए 'यथार्थ गीता' को तीन-चार बार अवश्य पढ़ें। 'यथार्थ गीता' भारत एवं विश्व की सभी प्रमुख भाषाओं में अनूदित एवं उपलब्ध है। इसे इण्टरनेट पर भी देखा जा सकता है।

प्रिय विद्यार्थियो! गीता का अनुसरण एवं अनुशीलन कर आप अपने जीवन के सभी लक्ष्यों को प्राप्त करेंगे। उपयोगी शिक्षा, अच्छी आजीविका, सुख-समृद्धि, ऐश्वर्य एवं विभूति आपका वरण करेगी और आध्यात्मिक पथ पर क्रमोन्नत उत्थान करते हुए आपको मोक्ष की भी प्राप्ति होगी। आप सभी बच्चों का आश्रम में स्वागत है। विश्व के आप सभी भावी नागरिकों का आह्वान है कि 'यथार्थ गीता' द्वारा विश्वशान्ति एवं 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को साकार करेंगे।

आप सबका जीवन मंगलमय हो!

–स्वामी श्री अड़गड़ानन्द जी
श्री गुरु पूर्णिमा, १८ जुलाई, सन् २००८ ई.
श्री परमहंस आश्रम, ग्रा. व पो,– शक्तेषगढ़,
चुनार – मिर्जापुर (उ. प्र.)

विश्वविश्रुत 'गीता'

विद्यार्थियो!

'गीता'-परिचय से पहले आइये इस विश्वविश्रुत (विश्वप्रसिद्ध) दिव्य ज्ञान पर लोगों के विचारों को जान लिया जाय।

भारतीय धर्म, दर्शन, संस्कृति एवं 'गीता' पर विश्व के संत, दार्शनिक और इतिहासकारों के विचार

● भगवद्गीता विश्व की सबसे सुन्दर एवं महान् ज्ञान की दार्शनिक कृति है।

– डब्लू वान ह्मबोल्ड (जर्मन विद्वान्)

● पूर्वी जगत् की सभी स्मरणीय वस्तुओं में 'भगवद्गीता' से श्रेष्ठ कोई भी वस्तु नहीं है। 'गीता' के साथ तुलना करने पर जगत् का आधुनिक समस्त ज्ञान मुझे तुच्छ लगता है। मैं नित्य प्रातःकाल अपने हृदय और बुद्धि को गीता-ज्ञान के पवित्र जल से धोया करता हूँ।

● प्राचीन युग की सर्वोत्तम वस्तुओं में 'गीता' से श्रेष्ठ कोई वस्तु नहीं है। 'गीता' में ऐसा उत्तम और सर्वव्यापी ज्ञान है कि उसकी रचना के असंख्य वर्ष हो गये फिर भी ऐसा दूसरा, एक भी ग्रन्थ नहीं लिखा गया है।

– मनीषी थोरो (अमेरिकी दार्शनिक)

● 'गीता' दुनिया की बेहतरीन इल्मी तोहफा है। इस एक किताब में दुनिया के सारे फिरकों का निचोड़ पेश कर दिया गया है।

– अलबेरुनी (अरब के मनीषी)

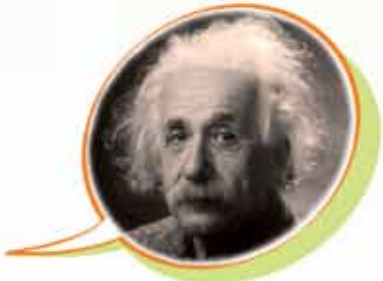

● हम भारतीय दर्शन एवं ज्ञान के हमेश ऋणी रहेंगे। भारत ने ही हमें गिनना सिखाया और शून्य (जीरो) की जानकारी दी। बिना उसके कोई भी वैज्ञानिक खोज न हो पाती।

– अलबर्ट आइन्सटीन (अमेरिकी वैज्ञानिक)

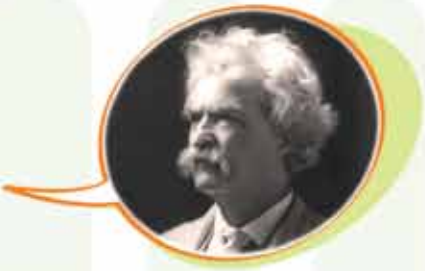

- धर्म के क्षेत्र में अन्य सभी निर्धन हैं जबकि भारत इसमें शिरमौर है।

– मार्क ट्वेन (अमेरिकी विद्वान्)

- भारत हमारे मानवमूल की मातृभूमि है और संस्कृत यूरोप के सभी भाषाओं की जननी है। यह हमारे दर्शन, गणित, विज्ञान, स्वराज्य एवं जनतन्त्र की जननी है। इस प्रकार भारत माता (मदर इण्डिया) बहुत तरह से हम सबकी माता है।

– विल डूराण्ट (अमेरिकी इतिहासकार)

- अगर मुझसे पूछा जाय कि इस पृथ्वी पर पूर्ण विकसित मानव ज्ञान कहाँ है? जीवन के सभी गूढ़ प्रश्नों पर गहन चिन्तन कर उसका समाधान खोजा है, तो मैं भारत का नाम लूँगा।

– मैक्स मूलर (जर्मन दार्शनिक)

- जिस मनुष्य ने 'गीता' का थोड़ा-सा भी अध्ययन किया है, वह संसार-बन्धन से मुक्त होकर आत्यन्तिक आनन्द का अधिकारी हो जाता है।

– जगद्गुरु आद्यशङ्कराचार्य

- मैंने यूरोप और एशिया के सभी धर्मों का अध्ययन किया है, परन्तु मुझे उन सबमें हिन्दूधर्म ही सर्वश्रेष्ठ दिखायी देता है। मेरा विश्वास है कि इसके सामने समस्त जगत् को सिर झुकाना पड़ेगा।

– रोमां रोलां (फ्रांसीसी विद्वान्)

- 'गीता' वह गुलदस्ता है जिसमें वेदों और उपनिषदों के सभी आध्यात्मिक ज्ञान-पुष्प सजे हुए हैं।

– स्वामी विवेकानन्द (भारत)

- The Bhagvad Geeta is the most beautiful and profound philosophical work in the world.

- W. Von Humboldt

- In the morning I bathe my intellect in the stupendous and cosmogonal philosophy of the Bhagvad - Geeta, in comparison with which our modern world and its literature seem puny and trivial.

- Henry David Thoreau

- I owed a magnificent day to the Bhagvad-Geeta. It was the first of books; it was as if an empire spoke to us, nothing small or unworthy, but large, serene, consistent, the voice of an old intelligence which in another age and climate had pondered and thus disposed of the same questions which exercise us.

- Ralph Waldo Emerson

- India was the motherland of our race and Sanskrit the mother of Europe's languages: she was the mother of our philosophy; mother, through the Arabs of much of our mathematics; mother, through the Buddha, of the ideals embodied in Christianity; mother, through the village community of self-government and democracy. Mother India is in many ways the mother of us all.

- Will Durant (American Historian)

- We owe a lot to the Indians, who taught us how to count, without which no worthwhile scientific discovery could have been made.

- Albert Einstein (American Scientist)

- If I were asked under what sky the human mind has most fully developed some of its choicest gifts, has most deeply pondered on the greatest problems of life and has found solutions, I should point to India.

- Max Mueller (German Scholar)

- If there is one place on the face of earth where all the dreams of living men have found a home from the very earliest days when man began the dream of existence, it is India.

- Romain Rolland (French Scholar)

- So far as I am able to judge, nothing has been left undone, either by man or nature, to make India the most extraordinary country that the sun visits on his rounds. Nothing seems to have been forgotten, nothing overlooked.

- Mark Twain

प्रिय बच्चो! आपलोगों ने देखा कि विश्वप्रसिद्ध 'गीता' ज्ञान का अगाध सागर है और इसने प्राचीन समय से आज तक के सभी मानव पीढ़ियों को प्रभावित किया है, मार्गदर्शक रही है। आपलोग भी भाग्यशाली हैं कि इस गौरवग्रन्थ 'गीता' से परिचित होने जा रहे हैं।

* * *

'गीता' और भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन

प्रिय बच्चो!

भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलनकारियों की प्रेरणा-स्रोत भी 'गीता' रही। लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, चन्द्रशेखर आजाद, सुभाषचन्द्र बोस, वीर सावरकर आदि 'गीता' से प्रेरित थे। मंगल पाण्डेय, खुदीराम बोस, सरदार भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, सुखदेव, राजगुरु आदि देशभक्त फाँसी के फन्दे पर झूल गये। उन सबके हाथों में 'गीता' थी और जुबान पर था–

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक

सुभाषचन्द्र बोस

चन्द्रशेखर आजाद

लाला लाजपत राय

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही॥

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥
अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः॥

(गीता, २/२२-२४)

अर्थात् हमारा शरीर एक वस्त्र है, वस्त्र बदलकर हम फिर लौटेंगे और लड़ेंगे। तुम हमारी आत्मा को नहीं मार सकते। आत्मा को शस्त्रादि से काटा नहीं जा सकता; अग्नि, जल एवं वायु क्रमशः इसे न जला सकते हैं, न गीला कर सकते हैं और न ही सुखा सकते हैं। यह आत्मा सर्वव्यापक, अचल, स्थिर रहनेवाला और सनातन है।

* * *

'गीता' पर राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के विचार

- 'गीता' की ही शरण लेकर गाँधीजी ने भारत को आजाद कराया और राष्ट्रपिता की उपाधि प्राप्त की। जब भी जीवन में वे अपने को हताश-निराश पाते थे, तो 'गीता' का आश्रय लेकर पुनः आशा एवं शक्ति से तरोताजा हो जाते थे।

- 'गीता' मेरी माता है। 'गीता' मेरी बाइबिल या कुरान ही नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष माता ही है। यह जगत् जननी है, यह सभी को तृप्त करती है।

- मैं तो चाहता हूँ, 'गीता' केवल राष्ट्रीय शालाओं में ही नहीं बल्कि प्रत्येक शिक्षण संस्थाओं में पढ़ायी जाय। एक हिन्दू बालक या बालिका के लिये 'गीता' को न जानना शर्म की बात होनी चाहिये। यह सच है कि 'गीता' विश्वधर्म की एक पुस्तक है।

* * *

॥ ॐ श्री परमात्मने नमः॥

ज्ञानामृत 'गीता' का प्रादुर्भाव

प्रिय विद्यार्थियो!

लगभग ५२०० वर्ष पूर्व महर्षि वेदव्यास द्वारा संस्कृत में रचित 'महाभारत' विश्व का महानतम इतिहास-ग्रन्थ है जो भारत की ही नहीं, विश्व की सभी प्रचलित भाषाओं में अनूदित है। एक लाख श्लोकों में संकलित 'महाभारत' के अध्याय छः 'भीष्मपर्व' में भगवान् श्रीकृष्ण की वाणी को महर्षि वेदव्यास ने अलग से 'श्रीमद्भगवद्गीता' के रूप में संकलित किया है।

आइये! संक्षेप में महाभारत और उसके महानायक, गीता-प्रदाता भगवान् श्रीकृष्ण के बारे में जाना जाय।

॥ महाभारत कथा ॥

प्राचीनकाल में ययाति नाम के बड़े प्रतापी राजा राज्य करते थे। उनकी दो रानियाँ थीं– देवयानी और शर्मिष्ठा। देवयानी के दो पुत्र हुए– यदु और तुर्वसु। यदु के नाम से यदुवंशी राजाओं की परम्परा चली। इसी वंश में आगे चलकर श्रीकृष्ण हुए।

दूसरी रानी शर्मिष्ठा के तीन पुत्रों में पुरु सबसे छोटे, बुद्धिमान् और महान् पराक्रमी थे। ययाति ने उन्हें ही अपना उत्तराधिकारी बनाया। इसी चन्द्रवंश के राजा दुष्यन्त के पुत्र

भरत के नाम पर इस देश का नाम 'भारत' पड़ा। राजा भरत के वंश में राजा हस्तिन् हुए, जिन्होंने दिल्ली के समीप हस्तिनापुर नामक नगर को बसाया। इसी वंश में कुरु नाम के राजा हुए, जिससे यह वंश 'कौरव वंश' कहलाया।

आज से लगभग ५४०० वर्ष पूर्व हस्तिनापुर के इस विशाल साम्राज्य पर कौरव वंश के राजा शान्तनु राज्य करते थे। उनकी दो रानियाँ थीं। प्रथम रानी गंगादेवी के पुत्र देवव्रत थे, जो भीष्म नाम से जाने जाते हैं। दूसरी रानी दासराज कन्या मत्स्योदरी थीं जो विवाह के बाद 'सत्यवती' कहलायीं। यह विवाह भीष्म की प्रतिज्ञा के बाद हुआ था कि "मैं आजीवन ब्रह्मचारी रहूँगा।" जिससे रानी सत्यवती का पुत्र ही राज्य का उत्तराधिकारी होगा। इस प्रतिज्ञा के कारण ही वे भीष्म कहलाये। वे आजीवन ब्रह्मचारी रहकर कौरव वंश की रक्षा करते रहे।

रानी सत्यवती के दो पुत्र हुए– चित्रांगद और विचित्रवीर्य। चित्रांगद की निःसंतान मृत्यु के बाद भीष्म ने विचित्रवीर्य को सिंहासन पर बैठाया और उनका विवाह काशी नरेश की पुत्रियों अम्बिका और अम्बालिका से कराया। महर्षि वेदव्यास के आशीर्वाद से अम्बिका से धृतराष्ट्र एवं अम्बालिका से पाण्डु नामक पुत्र हुए और अम्बालिका की दासी ने भी एक पुत्र को जन्म दिया जिनका नाम विदुर था।

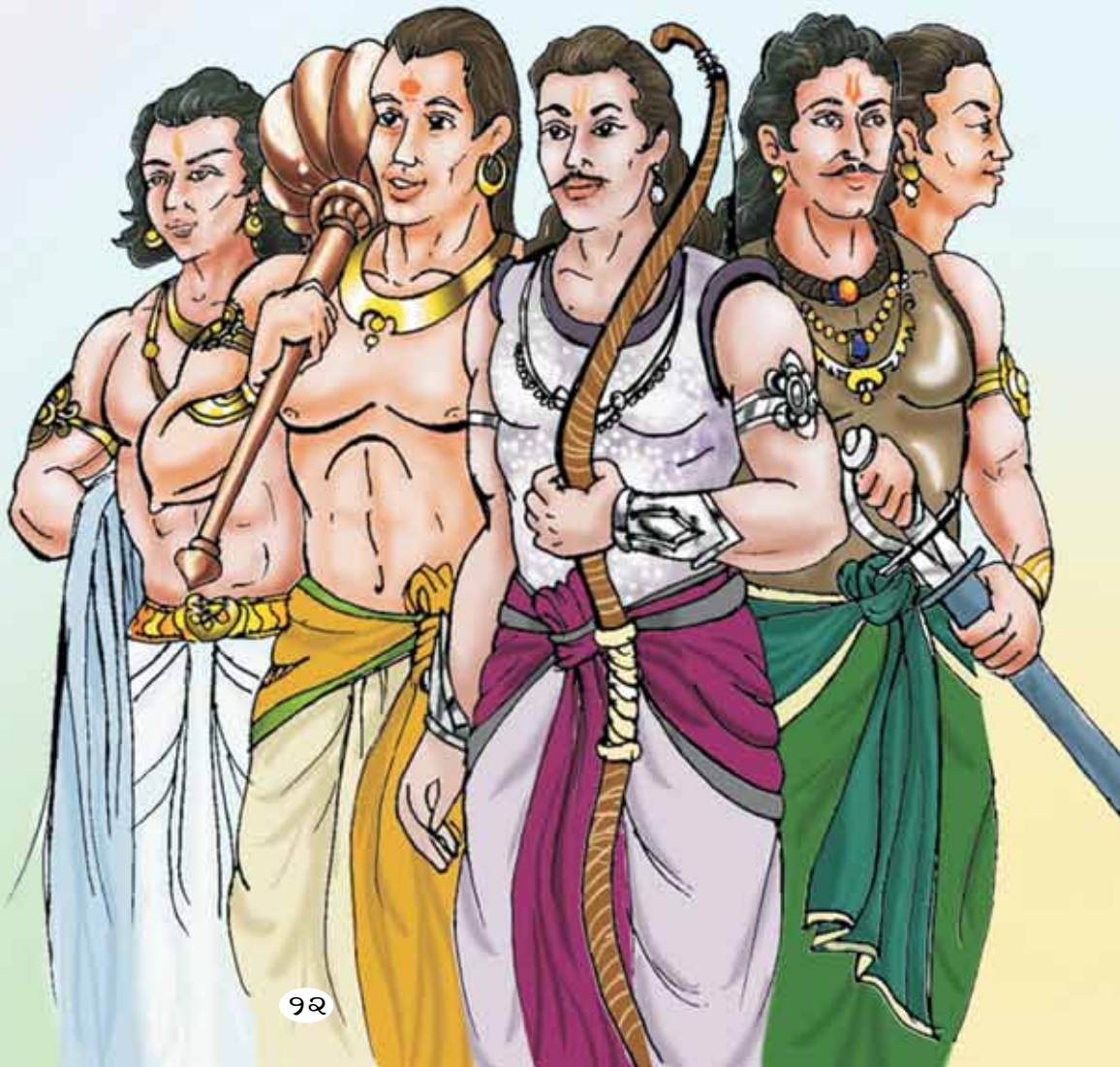

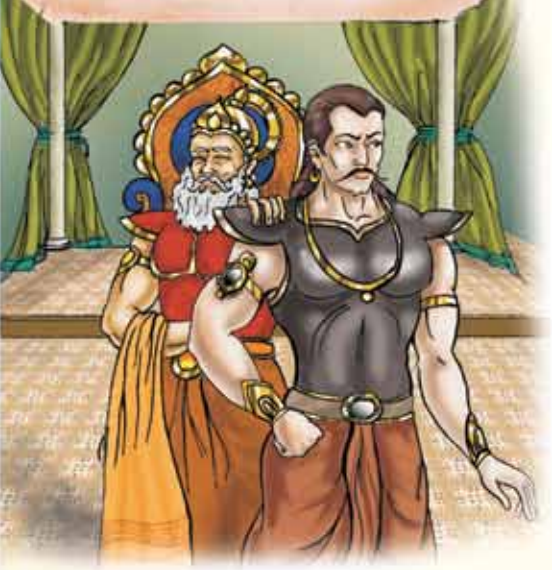

धृतराष्ट्र का विवाह गान्धार देश की राजकन्या गान्धारी से हुआ। पाण्डु का विवाह राजा कुन्तिभोज की पुत्री कुन्ती और मद्र देश की राजकुमारी माद्री से हुआ। धृतराष्ट्र जन्म से अन्धे थे, इसलिये भीष्म पितामह ने राजसिंहासन पर पाण्डु को बैठाया और विद्वान् विदुर को मंत्री बनाया।

गान्धारी को दुर्योधन, दुःशासन, दुःसह आदि सौ पुत्र तथा दुःशला नाम की एक कन्या थी। ये सभी भाई कौरव नाम से प्रसिद्ध हुए।

कुन्ती से तीन पुत्र युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन तथा माद्री से दो पुत्र नकुल और सहदेव हुए। पाण्डु के पुत्र होने से पाँचों भाई पाण्डव कहलाये। पाण्डव शूरवीर, पराक्रमी और शीलवान् थे। सभी कौरव एवं पाण्डव गुरु कृपाचार्य से एक साथ विद्या ग्रहण कर रहे थे। बाद में भीष्म के अनुरोध पर गुरु द्रोणाचार्य ने सभी राजकुमारों को धनुर्विद्या सिखलायी। सभी राजकुमारों में तीर चलाने में अर्जुन तथा गदायुद्ध में भीम व दुर्योधन निपुण थे।

कुछ वर्षों तक राज्य करने के बाद पाण्डु की मृत्यु हो गयी। पाण्डव राजसिंहासन के वास्तविक उत्तराधिकारी थे लेकिन दुर्योधन को यह बात पसन्द न थी। पुत्रमोह में अन्धे धृतराष्ट्र की भी इच्छा थी कि राज्य उसके बेटे दुर्योधन को मिले।

धृतराष्ट्र के पुत्र कौरव पाण्डवों से जलने लगे और उन्हें तरह-तरह से कष्ट पहुँचाना शुरू कर दिया। उन्होंने भीम को जहर दिया, लाक्षागृह का निर्माण कराकर उसमें कुन्तीसहित पाँचों पाण्डवों को जलाने का उपाय भी किया। बैरभाव बढ़ता गया। अन्त में पितामह भीष्म के समझाने पर कुरु राज्य के दो हिस्से किये गये। कौरव हस्तिनापुर में राज्य करते रहे और पाण्डवों को एक अलग राज्य दे दिया गया, जो इन्द्रप्रस्थ के नाम से विख्यात हुआ। इस प्रकार कुछ समय तक शान्ति रही।

कुछ वर्षों बाद दुष्ट दुर्योधन के आमन्त्रण पर चौसर (जुए के खेल) में कुटिल शकुनि ने युधिष्ठिर को हरा दिया, जिसके फलस्वरूप पाण्डवों का राज्य छिन गया और उन्हें बारह वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास भोगना पड़ा। सारी शर्तें पूरी कर वनवास से लौटने पर भी लालची दुर्योधन ने राज्य वापस करने से इनकार कर दिया। पाण्डवों के वनवास के दौरान वह चतुरंगिणी सेना इकट्ठी कर मदान्ध हो गया था।

अन्तिम प्रयासहेतु योगेश्वर श्रीकृष्ण शान्तिदूत के रूप में महाराजा धृतराष्ट्र से मिले, लेकिन मदान्ध दुर्योधन ने 'सूई की नोंक बराबर भूमि' भी देने से इनकार कर दिया। अन्त में युद्ध हुआ।

युद्ध में दुर्योधन सहित सारे कौरव मारे गये और पाण्डवों की विजय हुई। पाण्डवों ने शरशय्या पर लेटे पितामह भीष्म से आशीर्वाद लेकर धर्म-साम्राज्य की स्थापना की।

बच्चों! धृतराष्ट्र अन्धे थे फिर भी रथचालक संजय के माध्यम से युद्ध का सारा विवरण सुन रहे थे। महर्षि वेदव्यास द्वारा प्रदत्त दिव्यदृष्टि से सञ्जय सारा विवरण सुना रहे थे और बता रहे थे कि राजन्! इस युद्ध में पाण्डवों की ही विजय होगी; क्योंकि भगवान् श्रीकृष्ण उनके साथ हैं। राजन्! जहाँ भगवान् हैं और अनुरागी भक्त है, वहीं पर ऐश्वर्य, विजय और ईश्वरीय विभूति है।

भगवान् श्रीकृष्ण ने महाभारत युद्ध में अपने प्रिय सखा-मित्र-शिष्य अर्जुन के सारथी बनकर उसे ऐश्वर्य, विजय, विभूति, साम्राज्य आदि सबकुछ उपलब्ध कराया।

संक्षेप में यही महाभारत की कथा है, जो भारत का प्रामाणिक इतिहास है। इसी घटित

घटना के माध्यम से और इसके पात्रों को प्रतीक बनाकर भगवान् श्रीकृष्ण ने गीताज्ञान का प्रादुर्भाव किया, उपदेश दिया।

महाभारत का ऐतिहासिक युद्ध सांसारिक है, जबकि 'गीता' का युद्ध आध्यात्मिक है। जिसमें एक ही मनुष्य के अन्तःकरण में स्थित अच्छी और बुरी प्रवृत्तियों का संघर्ष है जिसका चित्रण 'गीता' में किया गया है।

भगवान् जानते थे कि अन्त में इस सांसारिक संघर्ष में जीतने वाला भी कुछ नहीं पायेगा, हताश और निराश रहेगा। संसार जन्म-मृत्यु के बीच का पड़ाव है, नश्वर है। अन्त में मानव खाली हाथ ही जाता है।

इसलिये भगवान् श्रीकृष्ण ने इस घटित घटना के नायकों को प्रतीक बनाकर वास्तविक युद्ध (आत्मदर्शन की विधि) को समझाया है। इस आध्यात्मिक युद्ध में विजयी मनुष्य अपने ज्योतिर्मय आत्मस्वरूप (सहज स्वरूप) की उपलब्धि द्वारा सदा रहने वाला जीवन, सदा रहने वाली समृद्धि, सदा रहने वाला धाम और शान्ति प्राप्त करता है। जो सभी के लिये सुलभ है।

वास्तव में वह 'एक' ज्योतिर्मय परमात्मा ही सत्य है, शाश्वत है, सनातन है। अन्ततः श्रद्धालु भक्त उसी में स्थिति प्राप्त करता है। वह चाहे कहीं भी जन्मा हो, किसी भी कुल-कबीला व उपाधि वाला हो, श्रद्धा और समर्पण के साथ लग जायेगा, वह भगवान् के वरद्हस्त के नीचे चलकर अपना सहज स्वरूप अवश्य पा जायेगा। वास्तव में पाने का यही विधान है।

प्रिय विद्यार्थियो!

अब आपलोगों को महाभारत के महानायक भगवान् श्रीकृष्ण के बारे में जानने की उत्सुकता होगी।

परमात्मा, भगवान्, इष्ट, सद्गुरु, योगेश्वर.....श्रीकृष्ण

भगवान् श्रीकृष्ण को सम्बोधित उपरोक्त सभी उपाधियाँ एक ही हैं, विशेषण हैं, जो साधना की पूर्णता पर ईश्वर-प्राप्ति की स्थितियाँ हैं। श्रीकृष्ण एक पूर्ण योगी थे। बालपन में गुरु महर्षि सान्दीपनि जी की शरण, सान्निध्य, सेवा एवं साधना द्वारा सारी विद्याओं में पारंगत होकर योगेश्वर श्रीकृष्ण आजीवन मानव-कल्याण करते रहे। योगेश्वर वह होता है जो पूर्णयोगी हो, महापुरुष हो, सद्गुरु हो और अपने अनुरागी शिष्य में इसका संचार करने में समर्थ हो। आपकी अगणित लीलाएँ हैं, जिनमें सबसे प्रमुख है– आपके श्रीमुख से प्रसारित गीताज्ञान। आपने पूरी विश्व मानवता को अविनाशी योग गीताज्ञान प्रदान कर ईश्वरप्राप्ति के साधन को जन-जन तक सुलभ कराया है।

वास्तव में योगेश्वर श्रीकृष्ण ने मोहग्रस्त अर्जुन को अविनाशी योग 'गीता' द्वारा युद्ध में प्रवृत्त कर शाश्वत विजय प्रदान करायी थी। सांसारिक युद्ध में तो विजय-हार-विजय

का क्रम चलता रहता है, जबकि 'गीता' के युद्ध द्वारा शाश्वत विजय प्राप्त होती है जिसके पीछे हार नहीं है।

'गीता' एक सम्पूर्ण साधनात्मक ग्रन्थ है, गुरु-शिष्य संवाद है। सद्गुरु हैं महापुरुष योगेश्वर श्रीकृष्ण और शिष्य है एक अनुरागी साधक अर्जुन। हम सबकी अनुरागपूरित लगन ही 'अर्जुन' है।

बच्चों, ध्यान देंगे! पूरी 'गीता' का एक भी श्लोक बाहरी मारकाट का समर्थन नहीं करता। 'गीता' में वर्णित युद्धक्षेत्र कोई भूक्षेत्र (भूखण्ड) नहीं है।

गीता वक्ता श्रीकृष्ण ने स्वयं ही बताया है कि– **"इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते।"**– कौन्तेय! यह शरीर ही एक क्षेत्र है (पढ़ें, यथार्थ गीता, १३/१)। यह युद्ध किसी अनुरागी साधक के अन्तःकरण में ही चलनेवाली अच्छी और बुरी प्रवृत्तियों का संघर्ष/युद्ध है। इसका पार पाना ही विजय है।

योगेश्वर श्रीकृष्ण ने महाभारत के पात्रों का उदाहरण देकर, उन्हें उद्देश्य बनाकर 'गीता' का उपदेश दिया है। जिसमें धर्मक्षेत्र और कुरुक्षेत्र, प्रकृति एवं पुरुष, दैवी एवं आसुरी सम्पद्, सजातीय एवं विजातीय प्रवृत्तियों के संघर्ष को इस घटित घटना के पात्रों के रूप में सम्बोधित करके समझाया है और अन्तःकरण के विकारों तथा परमात्मा की प्राप्ति के साधनों का चित्रण किया है।

गीतोक्त युद्ध में विजयी साधक को शाश्वत विजय प्राप्त होती है। साधक, आवागमन (जन्म-मरण-जन्म) के चक्र से मुक्त होकर परमात्मा के परमधाम को प्राप्त होता है।

इसको समझने के लिये अपने गुरुजन एवं माता-पिता से पूछें और 'यथार्थ गीता' पढ़ें।

* * *

सनातन सत्य – उद्‌बोधन

(सनातन सत्य है एकमात्र परमात्मा, उसकी जानकारी की विधि है– 'गीता')

विश्व के आप सभी बच्चे भाग्यशाली हैं कि आपका 'गीता' से नाता जुड़ रहा है। भारतीय बच्चों को विशेष गौरव-बोध होगा कि आपका जन्म 'गीता' की प्राकट्यस्थली आर्यावर्त भारत में हुआ है। प्राचीन वैदिककाल से आज तक भारतीय अध्यात्म, दर्शन एवं संस्कृति ने पूरे विश्व को प्रभावित एवं आकर्षित किया है। भारत राष्ट्र धर्म, साहित्य, कला, विज्ञान एवं संगीत आदि का एक वृहद् सांस्कृतिक केन्द्र है और निःसन्देह धर्म इसका प्राण है।

विश्व की सभी सभ्यताओं ने भारतीय धर्म एवं दर्शन को स्वीकार एवं अंगीकार किया है। सभी देशों के मनीषी, विचारक, साहित्यकार एवं इतिहासकारों ने इससे प्रेरणा ली है, अपनाया है और इसका उल्लेख भी किया है।

विश्व के सभी धर्मों में भारत की अध्यात्म-विद्या का ही प्रवाह मिलता है और इसी अध्यात्म-विद्या के बल पर भारत विश्वगुरु रहा है और आज भी है। वह ज्ञान ज्यों-का-त्यों श्रीमद्‌भगवद्‌गीता भाष्य 'यथार्थ गीता' में आज भी सुरक्षित है।

प्रिय विद्यार्थियो! आप सभी इस राष्ट्र के भावी नागरिक हैं, अतः आपका यह विशेष कर्तव्य बनता है कि अपने देश की इस आध्यात्मिक धरोहर एवं गौरवशाली परम्परा को जानें, जीवन में इसका पालन करें और इसका दूत बनकर पूरे विश्व को इस महान् ज्ञान से मण्डित करें।

* * *

— संदेश —

सत्य वस्तु का तीनों कालों में अभाव नहीं है और असत्य वस्तु का अस्तित्व नहीं है। एक परमात्मा ही तीनों कालों में सत्य है, शाश्वत है, सनातन है।

- स्वामी श्री अड़गड़ानन्दजी महाराज

भारत का प्राचीन गौरव– सनातन, आर्य, हिन्दू धर्म

आर्यावर्त भारत राष्ट्र के दर्शन और अध्यात्म की धुरी है 'धर्म' और यह धर्म 'सनातन धर्म' कहा जाता है। 'सनातन' का अर्थ है– जो हमेशा से था, है और रहेगा। इसे हमारे वेद और उपनिषदों ने परमात्मा, आत्मा या ब्रह्म कहा है। वह ब्रह्म ज्योतिर्मय है। उसी से ब्रह्माण्ड

की उत्पत्ति हुई है और उसी में इसका विलय भी हो जाता है। यह क्रम निरन्तर चलता रहता है। यही सृष्टि का नियम है।

- उस सनातन परमात्मा, आत्मा या ब्रह्म को जानना, उसका साक्षात्कार करना और उसको धारण करना ही **'सनातन धर्म'** है।
- एक परमात्मा ही शाश्वत है, उसके सिवाय किसी का अस्तित्व नहीं है। उस अस्तित्ववान्, अविनाशी परमात्मा का उपासक **'आर्य'** कहलाता है।
- भगवान् कहते हैं– "मैं सबके हृदय में समाविष्ट होकर सदा निवास करता हूँ।"– **'सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो'** (गीता, १५/१५)

  उस हृदयस्थित ज्योतिर्मय परमात्मा का उपासक **'हिन्दू'** कहलाता है।

सृष्टि के आदि धर्मशास्त्र 'गीता' से इन तीनों नाम– सनातन, आर्य व हिन्दू शब्द को लिया गया है। तीनों का आशय एक ही है। तीनों परम पवित्र हैं। ऋषि-महर्षियों ने चिन्तन करके समय-समय पर ये नाम दिये हैं।

अतः सभी या विश्व का जो भी मनुष्य उस सनातन, शाश्वत, हृदय स्थित परमात्मा को प्राप्त या धारण करने के लिये प्रयत्नशील है, सनातन धर्म का अनुयायी है, उपासक है।

इस सनातन धर्म को सम्पूर्ण रूप से श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित किया गया है, जो संस्कृत में है। ५२०० वर्षों बाद इसकी यथावत् सम्पूर्ण जानकारी, शाश्वत व्याख्या 'यथार्थ गीता' में पुनर्प्रकाशित है जो कि सरल-सुबोध हिन्दी में है।

आइये इसको क्रम-क्रम से जानें!.....

चिर प्राचीन एवं चिर नवीन प्रश्न

प्रिय बच्चो! सृष्टि के आरम्भ से, चिर-प्राचीनकाल से ही मानव जिज्ञासु रहा है कि–

- सत्य क्या है? मैं कौन हूँ? मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है?
- इस सृष्टि (ब्रह्माण्ड) का सृजन, पालन एवं परिवर्तन करनेवाली सत्ता कौन है?
- क्या उस सर्वोच्च सत्ता को जाना जा सकता है?
- यदि 'हाँ' तो उस सत्ता को जानने या साक्षात्कार करने की विधि क्या है?

सृष्टि के प्रारम्भ से ही आर्यावर्त भारत के सत्यान्वेषी ऋषि-मुनियों ने अनवरत चिन्तन-साधन कर इन सभी प्रश्नों का उत्तर खोजा है और सत्य का साक्षात्कार किया है।

वस्तुतः जीव-जगत् और अध्यात्म (आत्मा या परमात्मा-सम्बन्धी ज्ञान) से सम्बन्धित सभी प्रश्नों के उत्तर व जिज्ञासाओं का समाधान भारतीय चिन्तन-दर्शन 'गीता' में उपलब्ध है।

जिज्ञासु विद्यार्थियो! ऊपर लिखे सभी प्रश्न एवं जिज्ञासाएँ चिर नवीन भी हैं, आपके भी हैं और होने भी चाहिये! क्योंकि ये ही आपको भी उस परमसत्य के अन्वेषण (खोज) हेतु प्रेरित करते हैं।

भारतीय ऋषि मुनियों ने खोज की है कि–

- एक परमात्मा ही सत्य है, शाश्वत है, सनातन है और वह हृदय में निवास करता है।
  परमात्मा **सत्य** है अर्थात् सच, सच्चा, सच्चाई है।
  परमात्मा **शाश्वत** है अर्थात् अजर, अमर, अविनाशी, अनादि, अनन्त है।
  परमात्मा **सनातन** है अर्थात् सदा से, अनादिकालसे, नित्य और निरन्तर है।
- वह एक परमात्मा ही सर्वोच्च सत्ता है। उसी को आत्मा, ब्रह्म, तत्त्व, ईश्वर, गाड या ख़ुदा भी कहते हैं। ये सभी नाम उसी परमात्मा को सम्बोधित पर्यायवाची नाम हैं, परमात्मदर्शी महापुरुषों द्वारा अपने-अपने देश-काल की भाषा के अनुसार नामकरण हैं।
- वह परमात्मा या ब्रह्म ज्योतिर्मय है। उसके एक अंशमात्र से ही समूचे ब्रह्माण्ड (सृष्टि) का सृजन, पालन एवं परिवर्तन होता रहता है। यही सृष्टि का नियम है।
  (गीता, १३/१७, ९/१७)
- हम सभी मानव उसी एक परमात्मा की रचना हैं और उसके ही पावन अंश हैं।
  (गीता, १५/७)
- वह ज्योतिर्मय परमात्मा सभी प्राणियों के हृदय में निवास करता है।
  (गीता, १३/१७, १८/६१)
- उस परमात्मा को जाना जा सकता है और उसका प्रत्यक्ष दर्शन भी किया जा सकता है। (इसकी पूर्ण जानकारी के लिये गीताभाष्य 'यथार्थ गीता' का अनुसरण आवश्यक है।) (गीता, ११/५४, २/२९)
- उस परमात्मा के दर्शन (परमात्मदर्शन, आत्मदर्शन, ब्रह्मदर्शन या तत्त्वदर्शन) के साथ ही हमारे सभी प्रश्नों का विलय हो जाता है तथा शेष रहता है केवल वह परमात्मा और परिणाम है– परमात्मस्थिति, तत्त्वस्थिति एवं शाश्वत धाम, परमानन्द व मोक्ष की प्राप्ति। यही हमारे जीवन का उद्देश्य है।
- वर्तमान महापुरुष (परमात्मस्थित सद्गुरु) द्वारा ही धर्म एवं धर्माचरण की जागृति, शाश्वतधाम, परमानन्द एवं मोक्ष की प्राप्ति सम्भव है। अतः किसी सद्गुरु का शरण, संरक्षण और उनकी सेवा आवश्यक है। (गीता,१४/२७,४/३४)

विशेष– इसके लिये किसी को भी गुरु न मान लें या बना लें; क्योंकि सद्गुरु ढूँढ़ने से नहीं मिलते और न ही उनकी कोई बाहरी पहचान ही है। इसके लिये एक परमात्मा में

श्रद्धा स्थिर करके ॐ का जप करें, सतत् करते रहें। परमात्मा ही प्रेरणा करके, आपकी आत्मा से जागृत होकर सद्गुरु का परिचय दे देंगे।

यह लेखन व वर्णन के अलावा बाकी सब क्रियात्मक है, जिसे चलकर ही जाना जा सकता है। अतः ईश्वरीय वाणी 'गीता' की यथावत् व्याख्या 'यथार्थ गीता' को अच्छी तरह पढ़कर, समझकर और उस पर चलकर ही हम ईश्वर तक की दूरी तय कर सकते हैं।

प्रिय विद्यार्थियो! 'यथार्थ गीता' के अनुशीलन से आप अपने जीवन में उत्तम शिक्षा, अच्छी आजीविका, सफलता, सुख-समृद्धि, नाम-यश और मोक्ष तक प्राप्त कर सकते हैं।

* * *

आइये! अब धर्म और धर्मशास्त्र के बारे में जाना जाय–
अब तक हम जान चुके हैं कि–

- **सत्य** – सत्य केवल एक परमात्मा ही है। वही शाश्वत और सनातन है।

—तो —

- **धर्म** – उस एक परमात्मा में श्रद्धा स्थिर करके उसको विदित करना, साक्षात्कार करना व धारण करना ही धर्म है।
- **धर्मशास्त्र** –उस परमात्मा को विदित व धारण करानेवाले क्रियात्मक व अनुशासनात्मक नियमों के ईश्वरीय वाणी का संकलन ही धर्मशास्त्र है।

अतः सृष्टि के प्रारम्भ से ही प्रसारित, योगेश्वर श्रीकृष्ण की वाणी 'श्रीमद्भगवद्गीता' ही विश्व का आदि धर्मशास्त्र है।

* * *

विश्व का आदि धर्मशास्त्र 'श्रीमद्भगवद्गीता'

भारत के प्राचीन एवं वैदिककालीन ऋषि-मुनियों ने जिस सत्य की खोज की थी एवं आत्मसाक्षात्कार किया था, उसका सम्पूर्ण वर्णन 'गीता' में उपलब्ध है।

भगवान् श्रीराम के प्रादुर्भाव (लाखों वर्ष पूर्व–त्रेता) से भी हजारों वर्ष पूर्व वैदिककालीन ऋषि-मुनियों ने सत्यान्वेषण कर एक परमात्मा को प्रत्यक्ष किया और भारत की वनस्थलियों में आश्रम बनाकर शिष्य-परम्परा में हृदयंगम (स्मृति एवं अनुभूति) कराते हुए इसे सँजोकर रखा। उसी सत्य को आज से लगभग ५२०० वर्ष पूर्व भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने श्रीमुख से प्रसारित किया।

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्।
विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत्।। (गीता, ४/१)

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा, "मैंने इस अविनाशी योग को आरम्भ में सूर्य से कहा, सूर्य ने मनु से कहा और मनु ने इक्ष्वाकु से कहा।"

महाराजा मनु इस पृथ्वी के प्रथम मानव थे। सम्पूर्ण विश्व उन्हीं से जायमान (उत्पन्न) है, इसलिये सभी मनुज (मानव) कहलाये। उन्हें ही विश्व की विविध भाषाओं में आदम-हव्वा, नूह इत्यादि अनेक नामों से जाना जाता है। महाराजा मनु को गीताज्ञान अपने पिता सूर्य से विरासत में मिला था जो समय के

अन्तराल से लगभग विस्मृत हो गया था। उसी का पुनः प्रसारण कुरुक्षेत्र (भारत) में भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा हुआ।

(बच्चो! यहाँ पर यह जिज्ञासा स्वाभाविक है– जो कि योगेश्वर श्रीकृष्ण के अनुरागी शिष्य अर्जुन को भी थी, ''भगवन्! जो अविनाशी-पुरातन योग आप मुझे बता रहे हैं उसे आपने ही कल्प के आरम्भ में सूर्य से कहा था, यह मैं कैसे मान लूँ? जबकि आपका जन्म तो अभी का है।'' यही तो गीता का लालित्य है, दर्शन है। इस रहस्य की पूर्ण जानकारी के लिये अवश्य पढ़ें 'यथार्थ गीता'– अध्याय ४, श्लोक १ से १० तक और उसका उपशम।)

श्रुत परम्परा से प्राप्त इस अविनाशी योग– 'गीता' को महाराजा मनु ने अपनी स्मृति में धारण कर स्मृति की परम्परा दी। यही प्रामाणिक विशुद्ध 'मनुस्मृति' है। विगत कुछ सौ वर्षों से प्रचारित 'मनुस्मृति' स्टेट पीरियड के व्यवस्थाकारों की देन थी जो समाज में ऊँच-नीच, छूत-अछूत, जाति-पाँति की दीवार खड़ी कर अपना हित साधने की व्यवस्था मात्र थी, धर्म तो कदापि नहीं थी।

(आज इस स्मृति का तो कहीं अता-पता नहीं है लेकिन इसका दुष्परिणाम भारत आज भी भोग रहा है। आइये! संकल्प लें कि हम इनका उन्मूलन कर समरस समाज की स्थापना करेंगे।)

'गीता' में भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा है कि मैं तुम्हें वही सनातन सत्य बतला रहा हूँ जो कि पूर्व के मनीषियों ने खोजा था, देखा था और पाया था– **'ऋषिभिर्बहुधागीतम्'** (गीता, १३/४) और भविष्य में होनेवाले महापुरुष भी यही पायेंगे और कहेंगे।

श्रीकृष्णकालीन महर्षि वेदव्यास से पहले कोई भी शास्त्र पुस्तक के रूप में नहीं था। श्रुतज्ञान से स्मृतिज्ञान (सुनकर याद रखने) की परम्परा थी। उन्होंने ही सुनकर स्मृति में धारण करने की परम्परा का समापन करते हुए चारों वेद, ब्रह्मसूत्र, पुराण, महाभारत, भागवत एवं गीता को संकलित (लिपिबद्ध) करके शास्त्र का स्वरूप प्रदान किया। अन्त में शास्त्रकार महर्षि वेदव्यास ने स्वयं निर्णय दिया कि गीता 'धर्मशास्त्र' है।

- **सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।**
  सारे उपनिषदों का सार 'गीता' है जिसे गोपाल कृष्ण ने दुहा है।

- **एकं शास्त्रं देवकीपुत्र गीतम्।**
  'गीता' ही एकमात्र शास्त्र है जो भगवान् का गायन है।

- **गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।**
  या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता।। (महाभारत, भीष्मपर्व, ४३/१)

'गीता' का ही भलीभाँति गायन करना चाहिये अर्थात् इसी का भलीभाँति श्रवण, कीर्तन, पठन-पाठन एवं मनन कर उसे धारण करना चाहिये। फिर अन्य शास्त्रों के विस्तार में जाने की क्या जरूरत है, क्योंकि यह स्वयं पद्मनाभ भगवान् के श्रीमुख से प्रसारित है।

- **'सर्वशास्त्रमयी गीता'**– (महाभारत, भीष्मपर्व, ४३/२)

सब शास्त्रों का सार 'गीता' है।

अतः लगभग ५२०० वर्ष पूर्व भगवान् श्रीकृष्ण के श्रीमुख से प्रसारित 'गीता' ही मानवमात्र का धर्मशास्त्र है; क्योंकि आज के प्रचलित सभी मज़हब, पन्थ एवं सम्प्रदाय श्रीकृष्णकाल में नहीं थे। उनके हजारों वर्षों पश्चात् जिन महापुरुषों ने एक ईश्वर को सत्य बताया, वे सभी 'गीता' के ही सन्देशवाहक हैं। संसार के सभी महापुरुष एक ही हैं। वैदिककाल के महर्षिगण, भगवान् श्रीराम एवं श्रीकृष्ण तथा महर्षि मूसा, महात्मा जरथुस्त्र, भगवान् महावीर, गौतम बुद्ध, ईसा मसीह, मुहम्मद साहब, आद्यशङ्कराचार्य, योगी मत्स्येन्द्रनाथ, सन्त कबीर, गोस्वामी तुलसीदास, गुरुनानक, स्वामी दयानन्द सरस्वती, श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द और परमहंस स्वामी श्री परमानन्द जी आदि सभी महापुरुषों ने 'गीता' के 'एक ईश्वरवाद' सन्देश को ही अपने-अपने देश-काल की भाषाओं में समझाया है और उस ईश्वर को ब्रह्म, परमात्मा, आत्मा, अहुरमज्दा, गॉड, खुदा, अल्लाह आदि पर्यायवाची नामों से सम्बोधित किया है।

सत्य की यही प्रतिध्वनि चारों वेद, उपनिषद्, रामायण, अवेस्ता, जैन साहित्य, बौद्ध साहित्य 'महापरिनिब्बानसुत्त', बाइबिल, कुरान, श्रीरामचरितमानस, कबीरवाणी साखी, गुरु ग्रन्थसाहब इत्यादि धार्मिक ग्रन्थों में है जो कि गीता के ही विविध भाषा-शैली में विस्तार हैं। इसीलिये भारत विश्वगुरु है।

* * *

'श्रीमद्भगवद्गीता' की यथावत् सुबोध हिन्दी व्याख्या

।। यथार्थ गीता ।।

मानवमात्र का एकमात्र धर्मशास्त्र

प्रिय विद्यार्थियो!

कालान्तर से 'गीता' का आशय विलुप्त हो चला था, धूमिल हो गया था, जिससे 'गीता' के नाम पर तमाम धार्मिक आडम्बर एवं सामाजिक कुरीतियाँ पनप गयी थीं या सामाजिक व्यवस्था के नाम पर स्वार्थवश पनपा दी गयी थीं। समाज में जाति-पाँति, वर्ण-व्यवस्था, ऊँच-नीच, धर्म-अधर्म व पन्थान्तरण की विकृत व्यवस्था जड़ जमा चुकी थी। इस भ्रमित (संशय) काल में आलोक-स्तम्भ के रूप में 'यथार्थ गीता' का प्रकाशन हुआ है। आइये 'यथार्थ गीता' की संक्षिप्त जानकारी ली जाय।

५२०० वर्षों के लम्बे अन्तराल के बाद स्वामी श्री अड़गड़ानन्द जी महाराज ने श्रीकृष्ण का दिव्य सन्देश 'गीता' जो कि संस्कृत में है, उसका हिन्दी में सहज, सुबोध, प्रत्यक्षानुभूत व्याख्या 'यथार्थ गीता' के रूप में किया है। ईश्वरीय प्रेरणा से श्री गुरु पूर्णिमा, २४ जुलाई वर्ष १९८३ में प्रकाशित 'यथार्थ गीता' अद्यावधि मानवमात्र का पथ-प्रदर्शन कर रही है। 'यथार्थ गीता' को भारत ही नहीं, पूरा विश्व स्वीकार कर रहा है।

भगवान् श्रीकृष्ण के आशय को यथा-अर्थ (ज्यों-का-त्यों) व्यक्त करने के कारण इसका नाम 'यथार्थ गीता' है। महाराजश्री ने 'यथार्थ गीता' प्रस्तुत करके सत्य के नाम पर फैली और सत्य-सी प्रतीत होनेवाली तमाम कुरीतियों का शमन करके हम सभी को कल्याण का रास्ता दिखलाया है।

स्वामी जी द्वारा लिखित 'यथार्थ गीता' अपने आप में एक सम्पूर्ण साधनग्रन्थ है। 'यथार्थ गीता' का ३-४ बार अध्ययन एवं मनन आपकी सभी शंकाओं एवं जिज्ञासाओं

का समाधान करते हुए ईश्वरीय साधना एवं ईश्वर साक्षात्कार तक की दूरी तय करा देगा। इसका अनुशीलन करके आप अपने जीवन में ऐश्वर्य, विजय और विभूति निश्चित रूप से प्राप्त करेंगे। आप अपने कार्यक्षेत्र में अग्रणी रहेंगे। संसार के भौतिक सुख-साधनों की प्राप्ति होगी और मोक्ष भी मिलेगा। मोक्ष से तात्पर्य है कि आवागमन (जन्म-मरण-जन्म का चक्र, जो कि दुसह दुःख है) के बन्धन से मुक्ति और परमधाम (ईश्वरत्व) की प्राप्ति। यही है 'गीता का पाथेय'– नर से नारायण, मानव से महामानव, पुरुष से महापुरुष तक की यात्रा!

'गीता' किसी विशेष व्यक्ति, वर्ग, समुदाय, सम्प्रदाय, देश-काल, पन्थ का ग्रन्थ नहीं है। यह प्रत्येक देश, समुदाय, सम्प्रदाय एवं प्रत्येक स्त्री-पुरुष व बच्चों के लिये है। अतः यह साधन-ग्रन्थ 'यथार्थ गीता' विश्व के हर घर में एवं हर व्यक्ति के पास होना चाहिये। विद्यार्थियों एवं सभी बच्चों के भी पास होना चाहिये। तभी आप सब इसका अध्ययन व मनन कर इस पर चल सकते हैं और विश्व की इस अमूल्य धरोहर को अक्षुण्ण (सुरक्षित) रख सकते हैं।

कालजयी कृति 'यथार्थ गीता' भारत की सभी प्रमुख भाषाओं– हिन्दी, मराठी, पंजाबी, गुजराती, उर्दू, संस्कृत, उड़िया, बंगला, तमिल, तेलगू, मलयालम, कन्नड़, आसामी एवं सिन्धी और विदेशी भाषाओं– अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच, नेपाली, स्पेनिस, नार्वेजियन, चायनीज, अरबी, फारसी, डच, इटालियन एवं रूसी भाषाओं में भी अनूदित एवं उपलब्ध है।

'यथार्थ गीता' का अभ्युदय बीसवीं शताब्दी की महानतम रचना, घटना एवं उपलब्धि है। वह समय अब दूर नहीं है, जब 'यथार्थ गीता'रूपी अक्षय वटवृक्ष की छाँव में सम्पूर्ण विश्व की मानवता शान्ति पायेगी।

'गीता' को यथावत् समझने के लिये, सांगोपांग जानकारी के लिये 'यथार्थ गीता' को तीन-चार बार अवश्य पढ़ें।

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

गीता महिमा गान – गुनगुनाते रहें!

पाठ गीता का सदा, करना बड़ा सत्कर्म है।
पाठ गीता का सदा, करना ही मानव धर्म है।।
ज्ञान गीता का सदा, हृदय में धरना चाहिये।
मनुष्य को हर रोज गीता पाठ करना चाहिये।।

ज्ञान गीता का जिन्हें, दुष्कर्म वो करते नहीं।
ज्ञान गीता का जिन्हें, वो मौत से डरते नहीं।।
इसलिये नित ज्ञान गीता का सुमिरना चाहिये।
मनुष्य को हर रोज गीता पाठ करना चाहिये।।

अमर हूँ मैं आत्मा, गीता सिखाती है मुझे।
अजर अमर अद्वैत हूँ, गीता बताती है मुझे।।
इसलिये मौत से हमें डरना नहीं चाहिये।
मनुष्य को हर रोज गीता पाठ करना चाहिये।।

शुद्ध चेतन आत्मा, द्रष्टा सकल जगजाल का।
इच्छुक हूँ भगवत्कृपा का, भय नहीं अब काल का।।
ऐसा निश्चय धारकर, निर्भय विचरना चाहिये।
मनुष्य को हर रोज गीता पाठ करना चाहिये।।

कृतकृत्य हुए वे लोग जिन्हें, भगवत् गीता प्यारी है।
है मानव जन्म सफल उनका, वे मुक्ति के अधिकारी हैं।।
है सभी शास्त्रों की जननी, वेदों का सार भरा इसमें।
जो गीता तथ्य विचार लिये, वे जग के परम सुखारी हैं।।

सत्कर्म धर्म और ज्ञान-ध्यान का, यथार्थ पथ दर्शाया है।
गीता है प्राण समान उन्हें, जो सज्जन तत्व विचारी हैं।।
श्रीभगवान् के मुख की वाणी है, दुःखचिन्ता हरनेवाली है।
गीता यथार्थ की शरण में हैं जो, उसके रक्षक प्रणधारी हैं।।

* * *

धर्म, धर्मशास्त्र और धर्म सिद्धान्त

जिज्ञासु बच्चो! अब तक हम जान चुके हैं कि–

- **सत्य :** केवल एक परमात्मा, ईश्वर, गॉड या ख़ुदा ही 'सत्य' है।
- **धर्म :** उस एक परमात्मा को धारण करना ही 'धर्म' है।
- **धर्मशास्त्र :** गीता ही मानवमात्र का एकमात्र आदि 'धर्मशास्त्र' है।

— तो —

धर्म-सिद्धान्त भी एक हैं, जिसमें ईश्वर एक, पाने की क्रिया एक, पथ में अनुकम्पा एक तथा परिणाम भी एक है। वह है ईश्वर-दर्शन, ईश्वरत्व की प्राप्ति। ये सभी सिध्दांत सम्पूर्णता से एक ही शास्त्र यथार्थ गीता में वर्णित हैं।

धर्म-सिद्धान्त – एक

अब आप लोगों की जानकारी एवं ज्ञानवर्द्धन हेतु 'गीता' के प्रमुख धर्म-सिद्धान्तों को नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है जो कि अनादिकाल से चले आ रहे हैं, शाश्वत एवं सनातन हैं। इन धर्म-सिद्धान्तों को सम्पूर्णता के साथ 'यथार्थ गीता' में वर्णित किया गया है। अतः हम सभी का, विश्व के मानवमात्र का धर्मशास्त्र श्रीमद्भगवद्गीता भाष्य 'यथार्थ गीता' है। यही सृष्टि का आदिशास्त्र है।

श्रीभगवानुवाच

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्।

विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत्।। (गीता, ४/१)

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा कि इस अविनाशी योग को मैंने आरम्भ में सूर्य से कहा, सूर्य ने अपने पुत्र मनु से कहा। जिसके अनुसार एक परमात्मा ही सत्य है, वही सर्वत्र व्याप्त है। योग-साधना के द्वारा वह परमात्मा दर्शन, स्पर्श और प्रवेश के लिये सुलभ है। गीता का ही सिद्धान्त कि एक परमात्मा ही सत्य है– यह विश्व के सभी मनीषी, सन्त, महात्मा कहते आये हैं; किन्तु उसे कैसे पाया जाय?– यह विधि गीता में ही समग्र रूप से सुरक्षित है।

सृष्टि के आरम्भ में जो शास्त्र भगवान् ने कहा था, वह विलुप्त हो गया था जिसे पुनः भगवान् ने ही द्वापर में, कुरुक्षेत्र (भारत) में अर्जुन के प्रति कहा। शिक्षा पर प्रतिबन्ध लग जाने से धर्म के नाम पर रूढ़ियाँ, शास्त्र के स्थान पर सामाजिक व्यवस्था प्रचलित हो गये थे। 'गीता' मूल संस्कृत में ७०० श्लोकों में सुरक्षित तो थी, किन्तु उसका आशय खो गया था जिसे पूज्य स्वामी श्री अड़गड़ानन्द जी महाराज ने 'यथार्थ गीता' भाष्य के रूप में पुनः प्रकाशित

किया है, जिसे विश्व धर्म संसद, विद्वत् परिषद्, ब्राह्मण महासभा इत्यादि विश्व की संस्थाओं ने भी प्रशंसित किया है। आप सबसे अपेक्षा है कि 'यथार्थ गीता' धर्मशास्त्र का अनुशीलन कर लोक में समृद्धि और परमश्रेय की नियत साधना में अग्रसर हों।

'गीता' के प्रमुख धर्म-सिद्धान्त निम्नलिखित हैं, उनकी यथावत् सुबोध व्याख्या के लिये पढ़ें 'यथार्थ गीता' जो भारत की सभी भाषाओं, विश्व की प्रमुख भाषाओं, आडियो-वीडियो कैसेट्स, सी.डी. और इण्टरनेट पर भी उपलब्ध है–

१. सभी प्रभु के पुत्र–

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।
मनः षष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति।। (गीता, १५/७)

सभी मानव ईश्वर की सन्तान हैं, अंश हैं (एक ही प्रभु के पुत्र हैं।)

२. मानव तन की सार्थकता–

अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम्।। (गीता, ९/३३)

सुखरहित, क्षणभंगुर, दुर्लभ मानव-तन को पाकर मेरा भजन कर अर्थात् भजन का अधिकार सभी मनुष्य शरीरधारी को है।

३. मनुष्य की केवल दो जाति–

द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च।
दैवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु।। (गीता, १६/६)

हे अर्जुन! मनुष्य केवल दो प्रकार के होते हैं– देवता और असुर। जिसके हृदय में दैवी सम्पत्ति कार्य करती है वह देवता है तथा जिसके हृदय में आसुरी सम्पत्ति कार्य करती है वह असुर है। तीसरी कोई अन्य जाति सृष्टि में नहीं है।

४. हर कामना ईश्वर से सुलभ–

त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा
यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते।
ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोक-
मश्नन्ति दिव्यान्दिवि देवभोगान्।। (गीता, ९/२०)

मुझे (एक इष्ट, परमात्मा, सद्गुरु को) भजकर लोग स्वर्ग तक की कामना करते हैं; मैं उन्हें देता हूँ। अर्थात् एक परमात्मा से सब कुछ सुलभ है।

५. भगवान की शरण से पापों का नाश हो जाता है–

अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः।
सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं सन्तरिष्यसि।। (गीता, ४/३६)

अर्जुन! तू सम्पूर्ण पापियों से भी अधिक पाप करनेवाला है तब भी ज्ञानरूपी नौका द्वारा निःसन्देह पार हो जायेगा।

६. ज्ञान–

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थ दर्शनम्।
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतोऽन्यथा।। (गीता, १३/११)

अध्यात्म ज्ञान– आत्मा के आधिपत्य में ईश्वर-सम्बन्धी ज्ञान (आत्मज्ञान) में एकरस स्थिति और तत्त्व के अर्थरूप परमात्मा का प्रत्यक्ष दर्शन ही ज्ञान है और इसके अतिरिक्त जो कुछ भी है, अज्ञान है। आत्मज्ञान, तत्त्वज्ञान के साथ ही मनुष्य आत्मस्थित, तत्त्वस्थित हो जाता है, परमात्मस्वरूप में स्थित हो जाता है।

७. भजन का अधिकार सबको है–

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः।। (गीता, ९/३०)

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति।
कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति।। (गीता, ९/३१)

अत्यन्त दुराचारी भी मेरा भजन करके शीघ्र ही धर्मात्मा हो जाता है एवं सदा रहनेवाली शाश्वत शान्ति को प्राप्त कर लेता है। अतः धर्मात्मा (धार्मिक) वह है जो एक परमात्मा के प्रति समर्पित है। गीता सदाचारी-दुराचारी में दरार-भेद नहीं डालती, सबका एक समान कल्याण करती है।

८. भगवत्पथ में बीज का नाश नहीं है–

नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते।
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्।। (गीता, २/४०)

इस आत्मदर्शन (आत्मा या परमात्मा के दर्शन) की क्रिया का स्वल्प (थोड़ा-सा भी) आचरण जन्म-मरण के महान् भय से उद्धार करनेवाला होता है।

९. ईश्वर का निवास–

सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो...। (गीता, १५/१५)

मैं ही सब प्राणियों के हृदय में अन्तर्यामी रूप से स्थित हूँ।

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।। (गीता, १८/६१)

ईश्वर सभी भूत-प्राणियों के हृदय में रहता है।

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्।। (गीता, १८/६२)

अर्जुन! तू सम्पूर्ण भाव से उस हृदयस्थ (हृदय में स्थित) एक ईश्वर, परमात्मा की शरण में जाओ, जिसकी कृपा से तू परमशान्ति, शाश्वत परमधाम को प्राप्त होगा।

१०. यज्ञ–

साधना की विधि-विशेष का नाम यज्ञ है।

सर्वाणीन्द्रियकर्माणि प्राणकर्माणि चापरे।
आत्मसंयमयोगाग्नौ जुह्वति ज्ञानदीपिते।। (गीता, ४/२७)

यज्ञ में साधक मनसहित सम्पूर्ण इन्द्रियों की चेष्टाओं को तथा प्राण के व्यापार को आत्मसाक्षात्कार द्वारा ज्ञान से प्रकाशित हुई आत्मा में, संयमरूपी योगाग्नि में हवन करते हैं।

अर्थात् इन्द्रियों को विषयों से समेटकर, संयत कर संयमरूपी अग्नि में भस्म या दग्ध करना यज्ञ है।

भौतिक द्रव्यों से सिद्ध होनेवाला यज्ञ अति अल्प है।

अपाने जुह्वति प्राणं प्राणेऽपानं तथापरे।
प्राणापानगतीरुद्ध्वा प्राणायामपरायणाः।। (गीता, ४/२९)

बहुत से योगी श्वास को प्रश्वास में हवन करते हैं और बहुत से प्रश्वास को श्वास में। इससे उन्नत अवस्था होने पर अन्य योगीजन श्वास-प्रश्वास की गति रोककर प्राणायामपरायण हो जाते हैं। इस प्रकार योग-साधना की विधि-विशेष का नाम यज्ञ है। उस यज्ञ को कार्यरूप देना कर्म है।

११. यज्ञ का परिणाम तथा यज्ञ करने का अधिकार–

यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम्।
नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम।। (गीता, ४/३१)

अर्जुन! यज्ञ जिसकी सृष्टि करता है, जिसे अवशेष छोड़ता है, वह है– अमृत, उसकी प्रत्यक्ष जानकारी ज्ञान है। उस ज्ञानामृत का पान करनेवाला योगी शाश्वत, सनातन ब्रह्म को प्राप्त होता है।

श्रीकृष्ण कहते हैं कि यज्ञरहित पुरुष को यह मानव-शरीर भी सुलभ नहीं होता तो परलोक कैसे मिलेगा? अर्थात् यज्ञ करने का अधिकार उन सभी को है जिन्हें मनुष्य-शरीर मिला है।

१२. ईश्वर को देखा जा सकता है–

भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन।
ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परन्तप।। (गीता, ११/५४)

अनन्य (अन्य न) भक्ति द्वारा मैं प्रत्यक्ष देखने, जानने तथा प्रवेश करने के लिये भी सुलभ हूँ।

आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेन-
माश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः।
आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोति
श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित्।। (गीता, २/२९)

इस अविनाशी आत्मा को कोई विरला ही (अनन्य भक्त) आश्चर्य की तरह देखता है। दूसरा कोई विरला साधक इसे आश्चर्य की भाँति सुनता है। सब सुनते भी नहीं क्योंकि यह प्रत्यक्ष दर्शन है।

१३. आत्मा ही सत्य है, शाश्वत है, सनातन है–

अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः।। (गीता, २/२४)

इस आत्मा को छेदा नहीं जा सकता, इसे जलाया नहीं जा सकता, जल इसे गीला नहीं कर सकता, आकाश इसे अपने में समाहित नहीं कर सकता। यह आत्मा सर्वव्यापक, अचल, स्थिर रहनेवाला और सनातन है। आत्मा ही सत्य है, शाश्वत है, सनातन है।

१४. विधाता और उससे उत्पन्न सृष्टि नश्वर है–

आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन।
मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते।। (गीता, ८/१६)

ब्रह्मा से लेकर कीट-पतंगादि सभी लोक पुनरावर्ती हैं, जन्म लेने और मरने तथा पुनः इसी क्रम में चलनेवाले हैं; किन्तु कौन्तेय! मुझे प्राप्त होकर उस पुरुष का पुनर्जन्म नहीं होता। अतः ब्रह्मा और उससे निर्मित सृष्टि, देवता और दानव दुःखों की खानि, क्षणभंगुर और नश्वर हैं।

१५. देव-पूजा अविवेकी ही करते हैं। वह पूजन अविधिपूर्वक है, इसलिये नष्ट हो जाता है–

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः।
तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया।। (गीता, ७/२०)

कामनाओं से जिनकी बुद्धि आक्रान्त है (कामनाओं से भरी है), ऐसे अविवेकी (मूढ़बुद्धिवाले) ही परमात्मा के अतिरिक्त अन्य देवताओं की पूजा करते हैं।

येऽप्यन्यदेवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विताः।
तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्यविधिपूर्वकम्।। (गीता, ९/२३)

देवताओं को पूजनेवाला मेरी ही पूजा करता है; किन्तु वह पूजन अविधिपूर्वक है, मेरी प्राप्ति की विधि से रहित है, इसलिये नष्ट हो जाता है।

शास्त्रविधि का त्याग–

अर्जुन! शास्त्रविधि को त्यागकर भजनेवाले सात्विक श्रद्धावाले देवताओं को, राजस पुरुष यक्ष-राक्षसों को और तामस पुरुष भूत-प्रेतों को पूजते हैं। (गीता, १७/४-५)

कर्शयन्तः शरीरस्थं भूतग्राममचेतसः।
मां चैवान्तः शरीरस्थं तान्विद्ध्यासुरनिश्चयान्।। (गीता, १७/६)

किन्तु वे शरीररूप में स्थित भूतसमुदाय और अन्तर्यामी रूप में स्थित मुझ परमात्मा को कृश (क्षीण) करनेवाले हैं। उनको तू असुर जान। अर्थात् देवताओं को पूजनेवाले भी आसुरी वृत्ति के अन्तर्गत आते हैं।

१६. अधम कौन है?–

तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराधमान्।
क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु।। (गीता, १६/१९)

जो यज्ञ की नियत विधि छोड़ कल्पित विधियों से यजन करते हैं वे ही क्रूरकर्मी, पापाचारी तथा मनुष्यों में अधम हैं। अन्य कोई अधम नहीं है।

१७. नियत विधि क्या है?–

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्।। (गीता, ८/१३)

ॐ, जो अक्षय ब्रह्म का परिचायक है उसका जप तथा मुझ एक परमात्मा का स्मरण, तत्त्वदर्शी महापुरुष के संरक्षण में ध्यान ही नियत (निर्धारित) विधि है।

१८. शास्त्र 'गीता' है–

इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ।
एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत।। (गीता, १५/२०)

इस प्रकार यह अति गोपनीय शास्त्र मेरे द्वारा कहा गया। इसे तत्त्व से जानकर मनुष्य पूर्णज्ञाता और कृतार्थ हो जाता है। अतः स्पष्ट है कि शास्त्र 'गीता' है।

तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि।। (गीता, १६/२४)

अर्जुन! तेरे कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य के निर्धारण में शास्त्र ही प्रमाण है। अतः गीताशास्त्र द्वारा निर्धारित विधि से ही आचरण करें।

१९. धर्म–

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज।। (गीता, १८/६६)

धार्मिक उथल-पुथल को त्यागकर एकमात्र मेरी शरण हो जा अर्थात् एक भगवान के प्रति पूर्ण समर्पण ही धर्म का मूल है।

उस प्रभु को पाने की नियत विधि (गीतोक्त विधि) का आचरण ही धर्माचरण है। (गीता, २/४०)

और जो उसे करता है वह अत्यन्त पापी भी शीघ्र धर्मात्मा हो जाता है। (अध्याय ९, श्लोक ३०-३१)

२०. धर्म कहाँ से प्राप्त करें?–

ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहममृतस्याव्ययस्य च।
शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्यैकान्तिकस्य च।। (गीता, १४/२७)

उस अविनाशी ब्रह्म का, अमृत का, शाश्वत धर्म का और अखण्ड एकरस आनन्द का मैं ही आश्रय हूँ अर्थात् परमात्मस्थित सद्गुरु ही इन सबके आश्रय हैं। सद्गुरु शरण से ही इनकी प्राप्ति सम्भव है।

२१. जहाँ गीता है, दुष्ट आत्माओं का प्रभाव नहीं होता–

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या
जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति
सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घाः।। (गीता, ११/३६)

भगवान् की महिमा से भयभीत होकर राक्षस भाग जाते हैं।

२२. 'यथार्थ गीता' के नियमित श्रवण, अध्ययन एवं अध्यापन से भगवान् प्रसन्न होते हैं और हर कामना पूर्ण होती है–

श्रद्धावान्, भाविक एवं जिज्ञासु मनुष्य को गीता सुनानेवाला पुरुष ईश्वर का अत्यन्त प्यारा बन जाता है।

य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति।
भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः।। (गीता, १८/६८)

जो पुरुष मुझमें परमप्रेम करके इस परम रहस्ययुक्त गीता के उपदेश को मेरे भक्तों में कहेगा, वह उपदेशित भक्त मुझे ही प्राप्त होगा– इसमें कोई सन्देह नहीं है।

न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः।
भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि।। (गीता, १८/६९)

न तो उससे (उपदेशकर्ता से) बढ़कर मेरा प्रिय कार्य करनेवाला मनुष्यों में कोई है और न पृथ्वी में उससे बढ़कर मेरा प्रिय कोई दूसरा होगा।

अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयोः।
ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः।। (गीता, १८/७०)

जो पुरुष हम दोनों के इस धर्ममय संवाद 'गीता' का अध्ययन करेगा, उसके द्वारा मैं ज्ञानयज्ञ से पूजित होऊँगा।

श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपि यो नरः।
सोऽपि मुक्तः शुभाँल्लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम्।। (गीता, १८/७१)

जिस पुरुष से गीतोक्त नियत कर्म पार नहीं लग पाता; किन्तु श्रद्धा से श्रवण करता है, सुनता है, वह भी पुण्यलोकों को प्राप्त होता है।

नोट : विश्व के सारे सम्प्रदायों एवं पन्थों की सत्यधारा 'गीता' का ही प्रसारण है।

आवश्यक : प्रत्येक विद्यार्थी को प्रतिदिन सुबह या शाम 'यथार्थ गीता' के चार श्लोकों का अर्थ सहित, लयपूर्वक पाठ अवश्य करना चाहिए।

* * *

— पूज्यश्री के श्रीमुख की वाणी —

.....हमारी यह संस्कृति है कि हम सभी कार्यों का प्रारम्भ व समापन प्रभु का स्मरण करते हुए करते हैं। इसलिए प्रिय बच्चों! सोते-जागते, शौच जाते, नहाते, खाना खाते, पानी पीते, उठते-बैठते, स्कूल जाते, पढ़ते-लिखते, खेलते-कूदते, जीवन के हर मोड़ पर एक परमात्मा का स्मरण बना रहे तो 'सोने में सुहागा' है। हाँ! सुबह-शाम १५-२० मिनट बैठ कर ओम् के जप के लिए समय अवश्य दें। सभी बच्चे, जवान, बूढ़े, स्त्री-पुरुष जिसे भी मानव तन मिला है सभी को ॐ का जप करना चाहिए।....

— स्वामी श्री अड़गड़ानन्दजी महाराज

महापुरुष, भगवान् , इष्ट, सद्गुरु, योगेश्वर (श्रीकृष्ण) की प्रार्थना

एक अनुरागी शिष्य (अर्जुन) द्वारा

त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं
त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता
सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे ।।११/१८।।
त्वमादिदेवः पुरुषः पुराण-
स्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम
त्वया ततं विश्वमनन्तरूप ।।११/३८।।
वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः
प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः
पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते ।।११/३९।।
पितासि लोकस्य चराचरस्य
त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान्।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो
लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव ।।११/४३।।

नोट- समस्त श्लोंको को कण्ठस्थ कर लें, सस्वर गायन करें और भावार्थ के लिए पढ़ें 'यथार्थ गीता'।

* * *

विद्यार्थियों के कर्त्तव्य

प्रिय विद्यार्थियो!

निम्नलिखित सूत्रों का पालन कर आप अपने जीवन के सभी लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं। पालन करके तो देखें!

नियत दिनचर्या

- प्रतिदिन ब्राह्म मुहूर्त में प्रातः चार बजे अवश्य उठ जाना चाहिये।
- ❐ उठकर किसी एक इष्ट, परमात्मा या सद्गुरु (सभी एक हैं, पर्यायवाची सम्बोधन हैं) का श्रद्धापूर्वक दस मिनट तक ध्यान करना चाहिये।
- ❐ इष्ट के ध्यान के बाद १५ मिनट तक ॐ (ओम्) का जप मुँह से बोलकर करें। श्वास अन्दर जाय तो ओम्, बाहर आये (प्रश्वास) तो ओम्। इस प्रकार श्वास-प्रश्वास की स्वाभाविक गति के साथ ओम् का लयपूर्वक धारावाही जप करें। जप करते समय श्वास-प्रश्वास के साथ ओम् के उतार-चढ़ाव पर भी ध्यान रखें।
- ❐ ध्यान हृदय में ही धरा जाता है (किया जाता है); क्योंकि परमात्मा वहीं निवास करता है।
- बच्चो! ॐ का ही जप क्यों?–

गीता में भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं–

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्।। (गीता, ८/१३)

जो पुरुष 'ओम् इति'– मात्र ओम्, जो परब्रह्म परमात्मा का परिचायक है उसका जप तथा मेरा स्मरण (अर्थात् परमात्मस्वरूप सद्गुरु के स्वरूप का ध्यान) करते हुए शरीर का त्याग कर जाता है (अर्थात् शरीर के सम्बन्धों का त्याग करके परमात्मा में स्थिति प्राप्त कर लेता है), वह पुरुष परमगति को प्राप्त होता है। जीते-जी ही इसकी उपलब्धि है। पूरी 'गीता' में परमात्मा श्रीकृष्ण ने सात बार ओम् का जिक्र किया है और केवल 'ओम्' इतना ही जप करने का निर्देश दिया है। क्यों न हम उन्हीं की बात को अक्षरशः मान लें? जबकि हम सब उन्हीं परमात्मा के

सनातन अंश हैं, सन्तान हैं– **ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।** (गीता, १५/७) अतः 'ॐ' का जप करें और इष्ट (सद्गुरु) का ध्यान करें।

वास्तव में उन परमात्मा, प्रभु के अनन्त नाम हैं। उनकी प्रार्थना, कीर्तन और गुणानुवाद करते समय उनकी विभूतियों, अन्तरंग भक्तों, अंशों और लीलाओं सहित उनके सहस्रों नाम ले सकते हैं। लेकिन चिन्तन और जप केवल 'ॐ' का ही करें।

- रोज सुबह बड़ों को, माता-पिता एवं गुरुजनों को सादर प्रणाम करें। घर के बड़े-बूढ़ों की सेवा करें और सभी की आज्ञा का पालन करें। इससे आपकी आयु, विद्या, यश और बल में वृद्धि होगी।
- प्रतिदिन सुबह या शाम 'यथार्थ गीता' के चार श्लोकों का अर्थसहित लयपूर्वक, सस्वर (गाते हुए) पाठ करें।
- **प्रति सप्ताह–**

❐ गीता का एक श्लोक कण्ठस्थ (याद) करें।

❐ एक 'यथार्थ गीता–अभ्यास-पुस्तिका' बनायें और उसमें प्रति सप्ताह पाँच श्लोक हाथ से लिखें।

❐ इस साप्ताहिक कार्य को अपने माता-पिता एवं विद्यालय में गुरुजन को दिखाएँ और कण्ठस्थ श्लोक उन्हें भी गाकर सुनाएँ।

❐ विद्यालय में, घर या पास-पड़ोस में अपने सहपाठी और मित्रों के साथ एक घण्टे का 'यथार्थ गीता ज्ञानगोष्ठी' का प्रति सप्ताह आयोजन करें। इसे गोष्ठी में 'यथार्थ गीता' का सामूहिक पाठ करें और उस पर आपसी परिचर्चा कर अपने ज्ञानकोश को बढ़ायें। इस आयोजन में अपने गुरुजन एवं अभिभावकों को भी आमन्त्रित कर उनका मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त करें।

- नियमित रूप से विद्यालय जायँ। पढ़ाई में पूरा ध्यान दें और स्कूल का होमवर्क रोज-का-रोज पूरा करें।
- उत्तम स्वास्थ्य एवं सौष्ठव के लिये रोज शारीरिक परिश्रम और खेलकूद में भाग लें और व्यायाम करें।
- रात नौ बजे तक सो जायँ, जिससे प्रातः चार बजे ब्राह्म मुहूर्त में उठ सकें। सोने-जागने के समय का नियमतः पालन करें। इससे आपके सारे कार्य व्यवस्थित रहेंगे।
- **आवश्यक**–रात में सोने से पहले इष्ट का ध्यान करें और दस मिनट तक ओम् का जप उपरोक्त विधि से करते-करते सो जायँ।

* * *

सफलता, समृद्धि एवं साधना के सूत्र

प्रिय विद्यार्थियो!

'गीता' एक अद्भुत ग्रन्थ है। मानव-जीवन का ऐसा कोई भी पहलू नहीं है जो इससे अछूता हो। यह सांसारिक उपलब्धियों को सुलभ कराते हुए मोक्ष तक प्रदान करती है। आप पीछे जान चुके हैं कि आर्यावर्त भारत के सभी स्मृतिज्ञान को संकलित एवं लिपिबद्ध कर महर्षि वेदव्यास ने स्वयं निर्णय दिया है कि–

'गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।'

कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य (अर्थात् क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये) के निर्धारण में जब गीताशास्त्र ही प्रमाण है तो फिर अन्य शास्त्रों के विस्तार में जाने की क्या जरूरत है? अतः शुभ संस्कारों के सृजन व सफलता के लिये जिन सद्गुणों का आधार चाहिये, वे गीता में सम्पूर्णता से वर्णित हैं, उनका अनुसरण करें।

गीतावक्ता श्रीकृष्ण बताते हैं कि इस संसार में मनुष्यों के स्वभाव दो प्रकार के होते हैं– देवताओं-जैसा और असुरों-जैसा। जब दैवी सम्पद् (दैवी गुणों) का बाहुल्य होता है तो मनुष्य देवताओं-जैसा होता है और जब आसुरी सम्पद् (आसुरी गुणों) का बाहुल्य होता है तो वही मनुष्य असुरों-जैसा है। सृष्टि में मनुष्य की दो ही जाति है, तीसरी नहीं।

प्रिय विद्यार्थियो! अपने आसुरी गुणों को निर्मूल करते हुए निरन्तर दैवी गुणों के अर्जन (वृद्धि) में लगे रहना चाहिये।

* दैवी सम्पत्ति का अर्जन करें *

गीता, अध्याय १६ के श्लोक संख्या १, २, ३ में सभी दैवी सम्पद् का वर्णन श्रीकृष्ण ने किया है। ये सारे गुण आंशिक रूप से हमारे-आप में, सब में हैं। अतः 'यथार्थ गीता' पढ़ें और दैवी सम्पद् का संवर्धन करें।

* आसुरी सम्पत्ति का शमन करें *

यथार्थ गीता, अध्याय १६ श्लोक संख्या ४ में आसुरी गुणों का वर्णन है।

आसुरी गुण हैं–पाखण्ड, घमण्ड, अभिमान, क्रोध, कठोर वाणी और अज्ञान। ये सारे आसुरी गुण भी हम-आप सबमें हैं। इनको न्यून एवं निर्मूल करते हुए दैवी-सम्पद् के लिये सतत् प्रयत्नशील रहना चाहिये।

* चरित्र की शक्ति *

चरित्र मानव की सर्वश्रेष्ठ सम्पत्ति है। मृत्यु के बाद भी मनुष्य अपने चरित्र द्वारा जीवित रहता है। बच्चो! चरित्रवान् व्यक्ति ही समाज, राष्ट्र और विश्व का नायक होता है। अतः जीवन में सर्वाङ्गीण सफलता के लिये आपको श्रेष्ठ चरित्र का निर्माण करना चाहिये। अपने अलौकिक चरित्र के द्वारा ही भगवान् श्रीराम, श्रीकृष्ण, मूसा, ईसा, मुहम्मद साहब, महात्मा बुद्ध, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी परमानन्द जी आदि आज भी पूज्य हैं।

गीतावक्ता भगवान् श्रीकृष्ण ने उत्तम चरित्र निर्माण के लिये दैवी गुणों का उपदेश अनुरागी शिष्य अर्जुन के माध्यम से मानवमात्र को दिया है, जिसे आप ऊपर पढ़ चुके हैं। वे आपके लिये भी हैं, उनका अर्जन ही श्रेष्ठ चरित्र का निर्माण है।

- चरित्र निर्माण की पहली शर्त है अपने दोषों को ढूँढ़कर उन्हें दूर करना और उनके प्रति सतत् जागरूक रहना।
- मनुष्य सदैव निर्दोष रहता है, उसके अवगुण ही उसे दोषी बनाते हैं। यदि हम अपने को दोषों से मुक्त कर लें (निर्मल हो जायँ) तो हम सभी के प्रिय होने के साथ ही प्रभु के भी प्रिय हो जायेंगे।

* विचारों की शक्ति *

- केवल विचारों की शक्ति ही मनुष्य को अन्य जीवों से भिन्न एवं विशिष्ट बनाती है।
- मनुष्य ने विचारशक्ति के द्वारा ही अध्यात्म, दर्शन, धर्म, विज्ञान, इतिहास, भूगोल, गणित, चिकित्सा, साहित्य, कला, संगीत आदि तमाम विधाओं का विकास किया है।
- विचारों में बड़ी शक्ति होती है। हम जैसा सोचते-विचारते हैं, वैसा ही बन जाते हैं। उत्तम विचार हमारी प्रगति करते हैं और गन्दे विचार हमारा पतन करते हैं।
- प्रिय बच्चो! इसलिये विचारों के प्रति प्रतिक्षण सावधान रहें। इसके लिये सद्ग्रन्थ 'गीता' का पाठ करें और सत्पुरुषों का संग करें। सत्संग के कैसेट व सीडी सुनें। ध्यान रखें! हम जैसा साहित्य पढ़ते हैं, मन में वैसे ही विचार उठने लगते हैं और उन्हीं से हमारा सारा व्यवहार व क्रियाकलाप प्रभावित होता है। अतः प्रेरणाप्रद अच्छा साहित्य ही पढ़ें।

* मन की शक्ति *

- विचारों का मूल केन्द्र मन होता है। विचार पहले मन में आता है और फिर शरीर उसके अनुरूप कार्य करने लगता है।

- अपने मन के स्वामी बनें, गुलाम नहीं। 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।'
- मन की निर्मलता और मनोबल की प्राप्ति के लिये नियमित रूप से एक परमात्मा की प्रार्थना और ओम् का जप करें।

* समय की शक्ति *

- जीवन का समय सीमित है; पर जितना भी है, जो भी है अमूल्य है।
- अपने समय का सदुपयोग कर हम बड़ी-से-बड़ी उपलब्धि प्राप्त कर सकते हैं, चाहे भौतिक उपलब्धि हो या आध्यात्मिक उपलब्धि।
- जीवन के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करना चाहिये। प्रतिदिन की समय-सारिणी बनाकर और उसका पालन कर हम सभी कार्य को व्यवस्थित ढंग से पूरा कर सकते हैं।
- समय के सबसे बड़े शत्रु हैं– आलस्य, निद्रा, प्रमाद और दीर्घसूत्री होना (टालना)। इन आदतों को समूल उखाड़ फेंकें।

  'आलस निद्रा जमुहाई, तीनों काल के भाई।' – श्री परमानन्द जी महाराज
- समय न तो किसी की प्रतीक्षा करता है और न बीता हुआ समय कभी वापस आता है। 'बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुधि लेय।' अतः आज से और अभी से समय का सदुपयोग प्रारम्भ कर दें।

* दुर्व्यसनों से दूर रहें *

- किसी प्रकार की बुरी आदत या लत न डालें।
- पान, बीड़ी, सिगरेट, गांजा, शराब, तम्बाकू, गुटखा और पान मसाला आदि नशीले पदार्थों का सेवन कदापि न करें। अगर इनकी आदत हो तो दृढ़-संकल्प के द्वारा इसका परित्याग कर दें। इससे आप तमाम शारीरिक एवं मानसिक रोगों से बच जायेंगे।
- अगर आपका कोई सहपाठी या मित्र इसका प्रयोग करता है तो प्रयास करके उसकी आदत को छुड़वायें या ऐसे लोगों का साथ छोड़ दें।
- अच्छे, विचारवान्, संस्कारवान् लोगों का ही संग करें और मित्र बनायें। बुरे लोगों का साथ छोड़ दें। मनुष्य के जीवन में संगति का बहुत प्रभाव पड़ता है। प्राचीन कहावत है कि– "मनुष्य अपनी संगति से जाना जाता है।" अतः सुसंगति करें, कुसंगति त्याग दें। सत्संगति से शुभ संस्कारों का उदय होता है।

* * *

ब्रह्मचर्य का पालन करें

- लक्ष्य, ब्रह्म, इष्ट की प्राप्तिहेतु मन एवं शरीर के दसों इन्द्रियों का संयम ही ब्रह्मचर्य है। इसका आचरणकर्ता (पालनकर्ता) ही ब्रह्मचारी है।
- इन इन्द्रियों का सबसे प्रमुख विषय है– कामवासना। मनसहित इन्द्रियाँ उधर अनायास भागती हैं, मनुष्य को हमेशा अस्थिर रखती हैं। इसकी सफलता साधना की प्रमुख शत्रु हैं।
- दृढ़ इच्छाशक्ति और संयम द्वारा ही ये वश में रहती हैं।

निम्न बातों का हमेशा ध्यान रखेंगे

- मन कभी स्थिर नहीं रहता, हमेशा कुछ-न-कुछ सोचता रहता है। मन पर सतत् निगरानी रखें, अशुभ चिन्तन को शुभ चिन्तन द्वारा बदलते रहें।
- मन में कामवासना का विचार या चिन्तन आते ही सतर्क हो जायँ, इस चिन्तन-क्रम को तुरन्त तोड़ें अन्यथा इन्द्रियों के सहयोग से ये आपको बहा ले जायेंगी। इसके लिये तुरन्त जगह बदल दें, दूसरे कार्य में व्यस्त हो जायँ, सद्ग्रन्थ 'गीता' पढ़ें, इष्ट का ध्यान और ओम् का जप करें।
- अश्लील दृश्य, फिल्म और टी.वी. कार्यक्रम न देखें। अश्लील किताब व पत्रिका न पढ़ें। इण्टरनेट पर न अश्लील चैटिंग (वार्तालाप) करें और न अश्लील साइट विजिट करें।
- उन्मुक्त नृत्य, गीत, संगीत कार्यक्रम में भाग न लें।
- सभी विद्यार्थी, पुरुष एवं महिलाओं को चाहिये कि स्कूल, विद्यालय, सार्वजनिक आयोजन, महापुरुषों के सत्संग और आश्रम आदि में शालीन व्यवहार करें और शालीन वस्त्र पहनकर जायँ। वैभव व अंग-प्रदर्शन तो कदापि न हो। अभिभावक भी इसका ध्यान रखें, पालन करें और करायें। इस प्रकार आप अपने एवं दूसरों के भी कल्याण में सहायक होते/होती हैं।
- **अपने को दृढ़ रखें–**

❐ **संतन के चित पैठ के, लखा दीख सब मात।**
की भगिनी समदर्श हैं, की पुत्री सम गात।।

भावार्थ–सन्तों के चित्त में बैठकर देखा गया कि नारी के प्रति उनकी जब भी दृष्टि पड़ी,

उनमें माता के दर्शन हुए अथवा बहन या पुत्री के समान उनके अंग प्रतीत हुए। अध्ययन, साधना में लगा व्यक्ति नारी को इसी दृष्टि से देखता है।

–स्वामी अड़गड़ानन्दजी महाराज
(शंका समाधान, ज्ञानगंगा-३३)

- **मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्।**–परायी स्त्री को माता के समान और पराये धन को मिट्टी के ढेले के समान मानें।
- किसी भी सुन्दर स्त्री पर नज़र पड़े तो उसमें माँ के दर्शन करो, मन-ही-मन उन्हें प्रणाम करो। तुम्हारे भीतर काम विकार नहीं उठेगा।

–श्री रामकृष्ण परमहंस

● छात्राओं और महिलाओं के कर्त्तव्य–

- किसी भी पुरुष के प्रति आकर्षित न हों। उन्हें अपने पिता, भाई या पुत्र के रूप में देखें। मन को सतत् नियन्त्रण में रखें। पर पुरुष का न स्पर्श करें, न करायें।
- बड़ों का, श्रेष्ठ पुरुषों एवं सन्तों का चरण स्पर्श करके प्रणाम या नमस्कार न करें। आदरसहित झुककर दूर से प्रणाम (नमस्कार) करें।

* * *

आत्मोन्नति की स्वर्णिम सूक्तियाँ

- नियमित एवं संयमित दिनचर्या सुखी जीवन का आधार है।
- मन को वश में रखें, इच्छाओं को नियन्त्रित करें और लक्ष्य के प्रति निरन्तर सचेत रहें।
- बुद्धि व विवेक से काम करनेवाला सदा उन्नति के पथ पर अग्रसर रहता है।
- संघर्षशील जीवन ही निखरता है। विपत्ति ही सम्पत्ति बन जाती है। संसार के सभी महान् पुरुषों ने जीवन के संघर्ष एवं कष्टों का डटकर मुकाबला किया है और सफलता प्राप्त की है।
- समझदारी, जिम्मेदारी, ईमानदारी एवं बहादुरी से जीवन जीयें।
- सात्विक भोजन करें। दूध, दही और घी का नियमित प्रयोग करें। ब्रह्मचर्य का पालन करें।
- व्यस्त रहें, मस्त रहें, स्वस्थ रहें। सलाह लें, सम्मान दें। सुख बाँटे, दुःख बँटायें।
- परिश्रमी, अध्ययनशील, विनम्र, मधुरभाषी, शिष्ट और चरित्रवान् व्यक्ति ही सफलता प्राप्त करता है।
- हमेशा आशान्वित एवं प्रसन्न रहें। पुरुषार्थी बनें, भाग्यवादी नहीं। सतत् पुरुषार्थ द्वारा दुर्भाग्य को मिटायें और सौभाग्य का निर्माण करें।
- स्वाध्याय द्वारा गीतोक्त साधना को अपनायें। स्वाध्याय अर्थात् 'यथार्थ गीता' को तीन-चार बार पढ़ें और बराबर उलटते-पटलते रहें। साधना में लग जायँ। चतुर्दिक सफलता प्राप्त करेंगे।

इन सूत्रों का पालन करने से आप में शुभ संस्कारों का सृजन होगा। आप में शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक और सर्वोपरि आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होगा। आपका जीवन सुख-समृद्धिपूर्ण होगा। आप अपने समाज, राष्ट्र एवं विश्व के महान् नागरिक होंगे।

* * *

'यथार्थ गीता' से....

श्रीकृष्ण के अनुसार महापुरुष ही कर्म के माध्यम हैं न कि केवल पुस्तक। किताब तो एक नुस्खा है। नुस्खा रटने से कोई निरोग नहीं होता, बल्कि उसे अमल में लाना पड़ता है।

॥ ॐ श्री सद्गुरुदेवाय नमः ॥

गुरु-महिमा

राम कृष्ण से को बड़ा, तिन्हहु तो गुरु कीन।
तीन लोक के ये धनी, गुरु आज्ञा आधीन॥

भगवान् श्रीराम, श्रीकृष्ण से भी बड़ा कोई पूजनीय है, वे भी तो मानव तनधारी थे। बालपन में उन्होंने भी गुरु विश्वामित्र, वशिष्ठजी तथा सांदीपनि मुनि के शरण में जाकर सभी लौकिक एवं पारलौकिक विद्या प्राप्त कर मानव से महामानव, पुरुष से महापुरुष की स्थिति प्राप्त की।

अतः बच्चो! सद्गुरु की शरण, उनकी सेवा और उनकी आज्ञा का पालन सभी विद्याओं की जननी है। यह आपको सामर्थ्यवान्, विद्यावान् और महान् बनाती है।

धन्या माता पिता धन्यो, गोत्रं धन्यं कुलोद्भवः।
धन्या च वसुधा देवि यत्र स्याद्गुरुभक्तता॥

जिसके अन्दर गुरुभक्ति है उसकी माता धन्य है, उसके पिता धन्य हैं, उसका वंश धन्य है, उसके वंश में जन्म लेनेवाले धन्य हैं, समग्र धरती माता धन्य है।

* * *

विश्व की महानतम संस्कृति 'भारत' की गुरु-शिष्य परम्परा

॥ ॐ श्री परमात्मने नमः ॥

गौरवशाली इतिहास-ग्रन्थ 'महाभारत'

प्रिय विद्यार्थियो!

महर्षि वेदव्यास द्वारा संकलित इतिहास-ग्रन्थ 'महाभारत' आर्यावर्त भारत का प्रामाणिक इतिहास है। इसमें सृष्टि के आरम्भ से लेकर द्वापर तक (आज से ५२०० वर्ष पूर्व श्रीकृष्णकाल तक) की भारतीय सभ्यता और संस्कृति का विवरण अंकित है। मानव-जीवन का ऐसा कोई भी पहलू नहीं है जो इससे अछूता हो। ऐसा कुछ भी नहीं जो महाभारत में न हो– लोकनीति, राजनीति, युद्धनीति, व्यवहारनीति, जीवन-दर्शन, अध्यात्म और धर्म।

भारतीय ऋषि-मुनियों का सत्यान्वेषण (सत्य– एकमात्र परमात्मा की खोज), साधना और ईश्वरप्राप्ति का सम्पूर्ण विवरण महाभारत में उपलब्ध है। महाभारत में वर्णित सभी कथानक और घटनाएँ सत्य हैं, हमारे पूर्वजों के कीर्तिमान हैं। हम सब उन्हीं पूर्वजों की सन्तान हैं।

महर्षि वेदव्यास द्वारा एक लाख श्लोकों में संकलित 'महाभारत' के छठवें अध्याय 'भीष्मपर्व' में वर्णित ७०० श्लोकीय 'श्रीमद्भगवद्गीता' हमलोगों का 'धर्मशास्त्र' है, जिसमें बताया गया है कि सत्य क्या है और उसे कैसे प्राप्त करें। इस महान् ज्ञान 'गीता' की संक्षिप्त जानकारी इस पुस्तिका के प्रारम्भ में दी गयी है। पूर्ण जानकारी गीताभाष्य 'यथार्थ गीता' में उपलब्ध है।

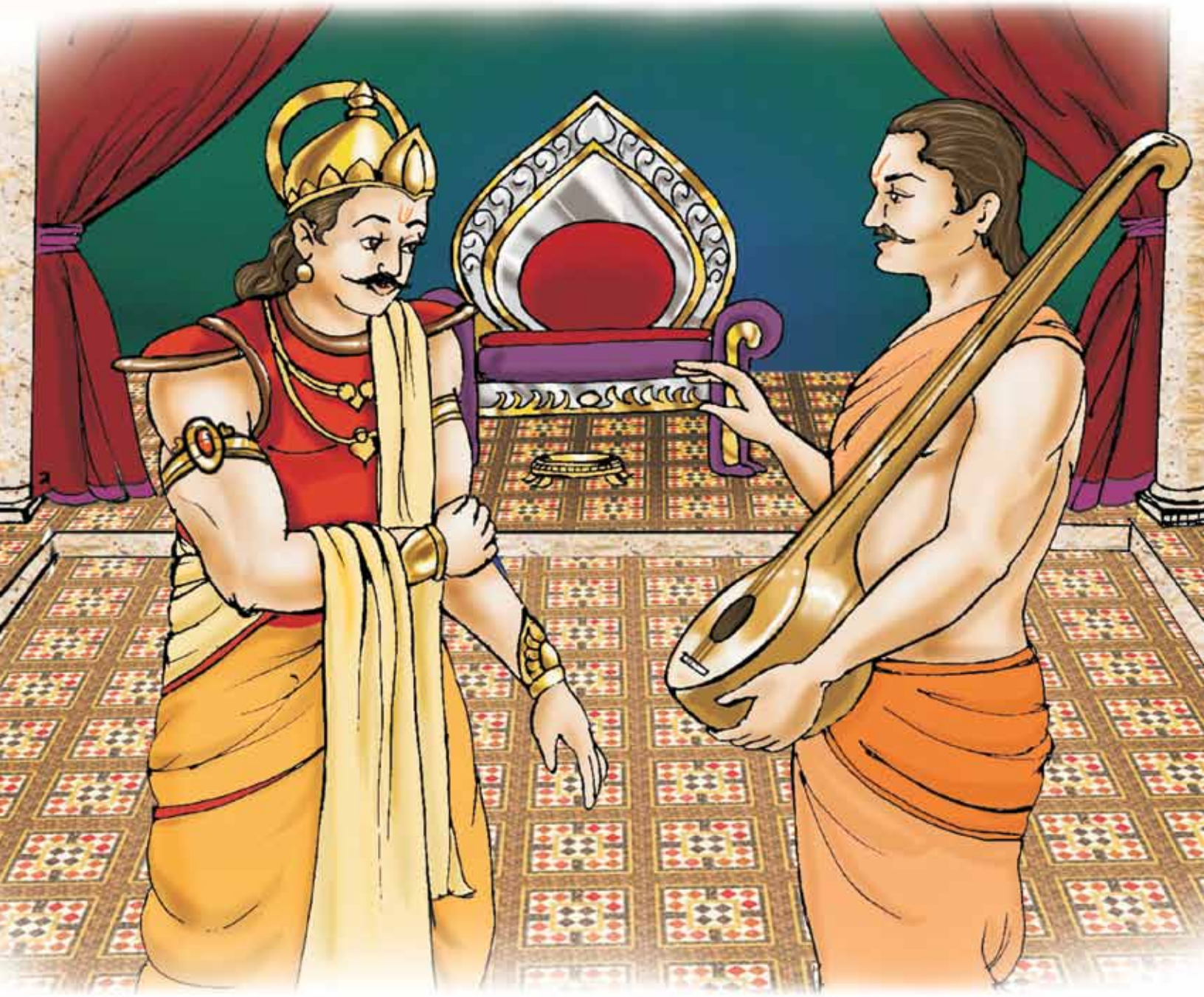

इतिहास मानव पीढ़ियों के सुख-दुःख की घटनाओं का संकलन होता है, जबकि धर्म अनन्त जीवन, शाश्वत शान्ति, परमात्मा का परमधाम प्राप्त कराता है और आनेवाली पीढ़ियों का मार्गदर्शक होता है। जहाँ धर्म है वहीं विजय है– **'यतो धर्मस्ततो जयः।'**

'गीता' मानवमात्र का योगदर्शन है, परमपिता परमात्मा से योग अर्थात् मिलन करानेवाली विद्या है। भगवान् श्रीकृष्ण जानते थे कि सांसारिक युद्ध में जीतनेवालों को भी शाश्वत विजय नहीं मिलती, चाहे वे चक्रवर्ती सम्राट ही क्यों न हों। इसलिये उन्होंने अपने अनन्य सखा-मित्र-शिष्य अर्जुन को माध्यम बनाकर 'गीता' के उपदेश द्वारा शाश्वत विजय का ज्ञान मानवमात्र को प्रदान किया।

महाभारत का प्रसिद्ध ऐतिहासिक युद्ध कुरुक्षेत्र के मैदान में हुआ था। लगभग छः अरब लोग वीरगति को प्राप्त हुए। विजयी सम्राट युधिष्ठिर को शान्ति नहीं प्राप्त हुई, उन्होंने राजपाट सबकुछ त्यागकर हिमालय की राह पकड़ ली। युद्ध के आरम्भ में प्राप्त 'गीता' का उपदेश उनके मस्तिष्क में गूँज रहा था, वह भजन करने निकल गये।

दुर्योधन का एक भाई युयुत्सु युद्ध आरम्भ होने के पूर्व ही पाण्डव-पक्ष में आ गये थे। महाराजा युधिष्ठिर को वनगमन करते देख बोले– "भैया! कहाँ जा रहे हैं? चक्रवर्ती सम्राटों के इस रत्नजटित सिंहासन पर कौन बैठेगा?" महाराजा युधिष्ठिर ने कहा– "युयुत्सु! इस पर तू बैठ और देख कि इसमें कितना सुख है। आख़िर स्वजनों का संहार इसी के लिये तो हुआ।" युयुत्सु ने कहा– "भैया! यह मुझे कदापि नहीं चाहिये।" तब महाराजा युधिष्ठिर ने कहा– "पौत्र परीक्षित कहीं खेलता होगा, उससे कहना, वह बैठेगा तो ठीक अन्यथा छोड़ इसकी चिन्ता। भला नश्वर के लिये कौन आँसू बहाये!" वे गीता के निर्दिष्ट भजन-पथ पर चल पड़े।

इस प्रकार 'महाभारत' आर्यावर्त भारत के इतिहास के साथ-साथ इसके संस्कृति का भी शास्त्र है और इसी के एक अध्याय में संकलित 'श्रीमद्भगवद्गीता' हमारा धर्मशास्त्र है।

* * *

'महाभारत' व 'गीता' के शिक्षाप्रद प्रेरक प्रसंग

विद्यार्थियों के ज्ञानवर्द्धन के लिये प्रस्तुत है 'महाभारत' व 'गीता' से कुछ शिक्षाप्रद प्रेरक प्रसंग। ये सभी कथानक, वृत्तान्त और दृष्टान्त पूज्य गुरुदेव श्री अड़गड़ानन्द जी महाराज के प्रवचनों से संकलित हैं, आपके श्रीमुख की वाणी हैं।

आपके रोचक, उपदेशात्मक मुखरित वाणी में ये सारे प्रसंग जीवन्त हो उठते हैं, मनो-मस्तिष्क में चलचित्र की तरह चलने लगते हैं। उनको शब्दशः प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। आशा है, ये शिक्षाप्रद प्रेरक प्रसंग आप सभी विद्यार्थियों के शिक्षा एवं साधना में सहायक होंगे। इनका अनुशीलन कर आप अपने जीवन में सुख-शान्ति, स्वास्थ्य, समृद्धि आदि सब कुछ प्राप्त करेंगे।

प्रिय विद्यार्थियो! महाभारत व गीता के शिक्षाप्रद प्रेरक प्रसंगों की एक शृंखला इसी पुस्तिका के भाग–9 में दी गयी है। कृपया इन प्रेरक प्रसंगों के लिए भाग– 9 अवश्य पढ़ें, आपको प्रेरणा मिलेगी।

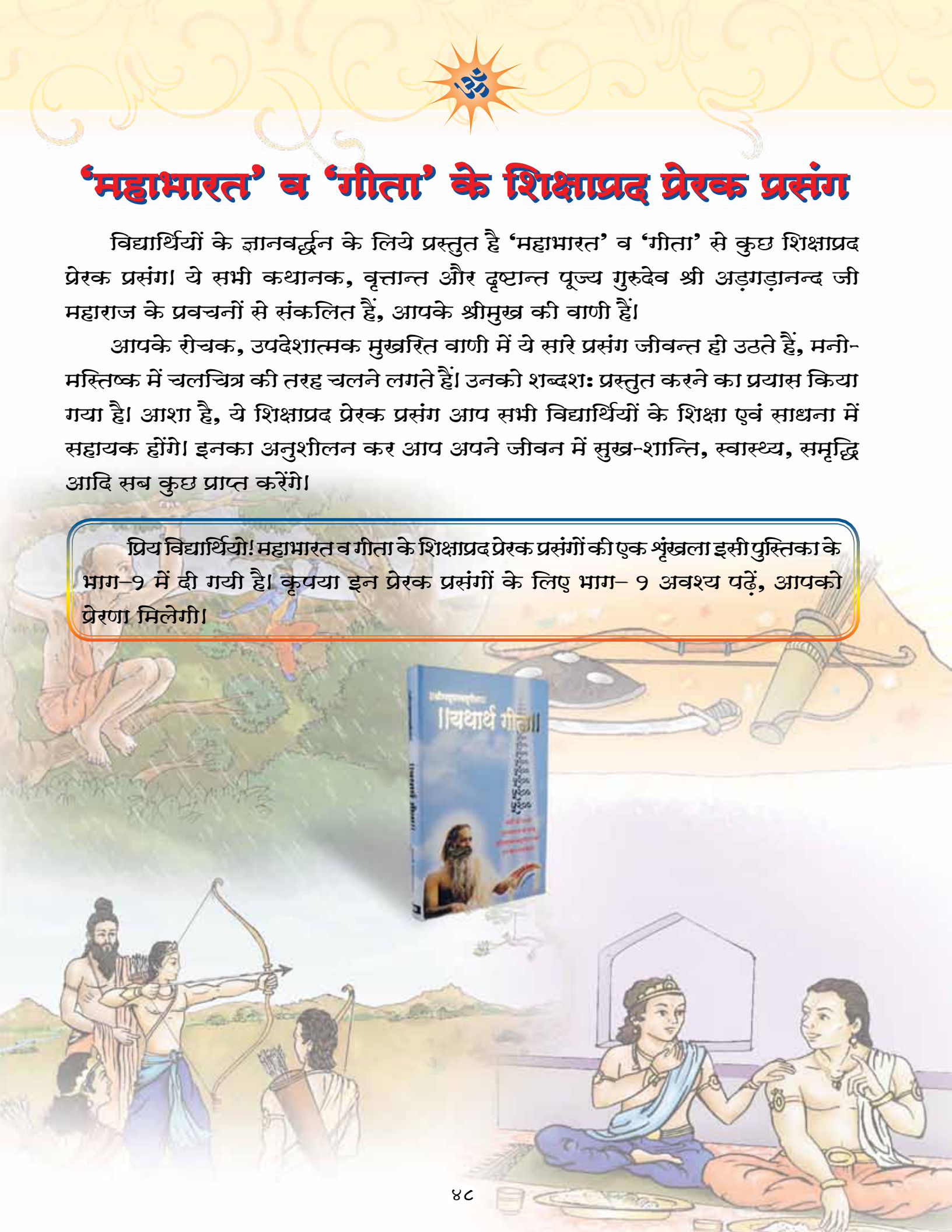

प्रेरक प्रसंग – ९

'गीता' का नियमित अध्ययन और श्रवण करें

'गीता' के अठारहवें अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है कि, "अर्जुन! हम दोनों के इस संवाद अर्थात् 'गीता' को जो पढ़ेगा और मेरे भक्तों में कहेगा, उससे बढ़कर मेरा प्रिय कार्य करनेवाला दूसरा कोई नहीं होगा। जो केवल श्रवण ही कर लेगा अर्थात् कानों से सुन लेगा, वह भी उत्तम पुण्यलोकों को प्राप्त होगा। जो आचरण अर्थात् साधना का अभ्यास करेगा, वह मुझे प्राप्त करेगा।" (पूर्ण जानकारी के लिये पढ़ें– यथार्थ गीता, अध्याय १८, श्लोक ६८ से ७१ तक)

दृष्टान्त है–महाभारत के सबसे मोहान्ध पात्र महाराजा धृतराष्ट्र थे। राज्य उनका था ही नहीं; लेकिन पुत्रमोह में पाण्डवों को उत्तराधिकार से वंचित करने के लिये हमेशा षड्यन्त्रों में संलिप्त रहे और दिखावे के लिये हमेशा 'प्रिय अनुजपुत्रो! प्रिय अनुजपुत्रो!' की झड़ी लगाये रहते थे, लेकिन सिर पर कभी हाथ नहीं फेरा।

वनवास की अवधि पूर्ण हो गयी थी, जो पाण्डवों को उनका राज्य लौटाने की शर्त थी। धृतराष्ट्र ने संजय से कहा, "जाओ! प्रिय युधिष्ठिर का सिर सूँघना, मेरी तरफ से प्यार जताकर कहना कि दुर्योधन दुष्ट है, दुराग्रही है, मेरा बात मानता ही नहीं। आधा राज्य क्या, वह पाण्डवों को पाँच गाँव भी देने को तैयार नहीं है। तुम तो समझदार हो, भाइयों में झगड़ा ठीक नहीं है। तुमलोग जंगल में ही रह जाओ। वैसे अब तो आदत भी पड़ गयी होगी। प्रत्येक दशा में शान्ति ही उचित है। तुम्हारे बड़े पिता की भी तुमसे यही अपेक्षा है।" इतने मोहान्ध थे धृतराष्ट्र!

महाभारत विजय के पश्चात् महाराजा युधिष्ठिर ने उन्हें सम्मानपूर्वक सिंहासन पर बैठाया और सेवा करते रहे। पन्द्रह वर्ष पश्चात् वह अर्धरात्रि को महल से गायब हो गये। कुछ दिनों में सुनायी पड़ा कि वे हरिद्वार में एक वृक्ष के नीचे बैठकर 'भजन' कर रहे हैं। छः महीने बाद महाराजा युधिष्ठिर उनसे मिलने गये। वे दिखायी तो पड़े; किन्तु उसी समय उन्होंने शरीर त्याग दिया। वे भजन में लगे थे, संजय के माध्यम से गीता सुन चुके थे। ऐसे पापी का अन्त तो दुःखद होना चाहिये था, पहाड़ से गिरकर मर जाना चाहिये था; किन्तु भजन करते उनका शरीर छूटा। यह है गीता सुनने का भी इतना बड़ा फल, माहात्म्य।

* * *

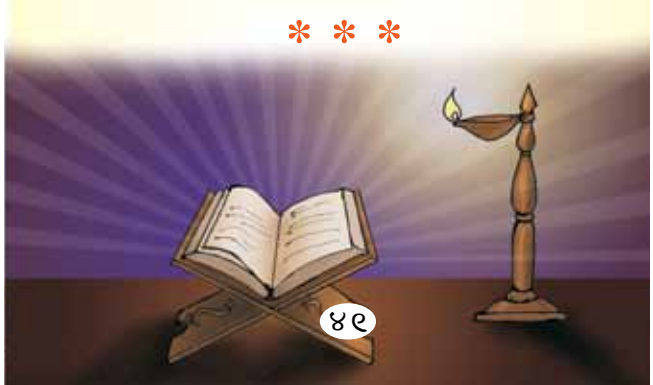

प्रेरक प्रसंग – २

अभिमानी नहीं होना चाहिये

विद्याध्ययन के उपरान्त अर्जुन को अपनी धनुर्धरता का अहंकार हो गया। विचरण करते वह एक बार रामेश्वरम् की ओर निकल गये। वहाँ उन्हें एक छोटा-सा बन्दर दिखायी

पड़ा। अर्जुन ने उससे पूछा, यह सेतु कैसा? बन्दर ने बताया, "यह श्रीराम सेतु है!" अर्जुन ने कहा, "श्रीराम तो विख्यात धनुर्धर थे फिर भी इतने पत्थर डुलवाये! मैं होता तो बाणों का सेतु बना देता।" बन्दर बोला, "उस युग के बन्दर बड़े बलशाली थे, बाणों का सेतु उनका भार कैसे वहन कर पाता? मैं उन्हीं प्रभु श्रीराम का एक बन्दर हूँ। आप पुल बनाइये, मैं उसका परीक्षण अभी करा देता हूँ।" अर्जुन ने तत्काल दिव्यास्त्रों का सेतु बना दिया। हनुमानजी ने पाँव रखा ही था कि वह समुद्र में चला गया। हनुमानजी तैरकर बाहर आये, बोले, "भैया! यह तो टूट गया।"

अर्जुन को बड़ी ग्लानि हुई। उनकी प्रतिष्ठा दाँव पर लग गयी थी। भगवान् से प्रार्थना किये कि यदि इस बार सेतु टूटा तो वह आत्मदाह कर लेंगे। अर्जुन ने पुनः दिव्यास्त्रों का आह्वान कर बाणों का पुल निर्माण कर दिये। सेतु निर्मित देख हनुमानजी ने आकार बढ़ाना आरम्भ कर दिया जिसे देख अर्जुन को विश्वास हो गया कि उन्हें अग्नि-समाधि लेनी ही पड़ेगी। हनुमानजी नवनिर्मित सेतु पर कुछ दूर चले, उछले-कूदे लेकिन सेतु नहीं टूटा। फिर जम्प मार-मार कर कूदे, लेकिन सेतु जस-का तस। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। इतने में समुद्र में खून की धारा दिखायी पड़ी। हनुमानजी उछलकर किनारे हो गये, देखा तो भगवान् ने पुल के नीचे अपनी पीठ लगा रखी थी। हनुमानजी चरणों में गिर पड़े, "प्रभु श्रीराम आप!" अर्जुन भी चरणों में गिर पड़े, "केशव आप!" (हनुमानजी को श्रीराम दिखायी दे रहे थे और अर्जुन को श्रीकृष्ण।) भगवान् ने कहा, "अर्जुन! इन्हें प्रणाम करो। ये हैं बजरंगबली हनुमानजी! और आज से अभिमान नहीं करना।"

वीरता, बुद्धिमत्ता, शिक्षा, धन और बल का कोई अन्त नहीं है। अतः विद्यार्थियों को अभिमान न कर इनका लोकहित में सदुपयोग करना चाहिये।

* * *

प्रेरक प्रसंग – ३

ब्रह्मचर्य में असीम शक्ति है।

पहला दृष्टान्त–

हिमालय की घाटी में विचरण करते भीम को अलकनन्दा नदी में कमल का एक पुष्प मिला, जिसे उन्होंने द्रौपदी को दिया। द्रौपदी ने कहा, "प्रिय भीम! यह तो विलक्षण सहस्रदल कमल है। यदि यह नदी में बहता आ रहा है तो ऊपर कहीं-न-कहीं उद्‌गम होना चाहिये। एक ताजा पुष्प लायें, मैं महाराजा युधिष्ठिर को भेंट करूँगी।" भीम नदी के उद्‌गम की ओर चल पड़े।

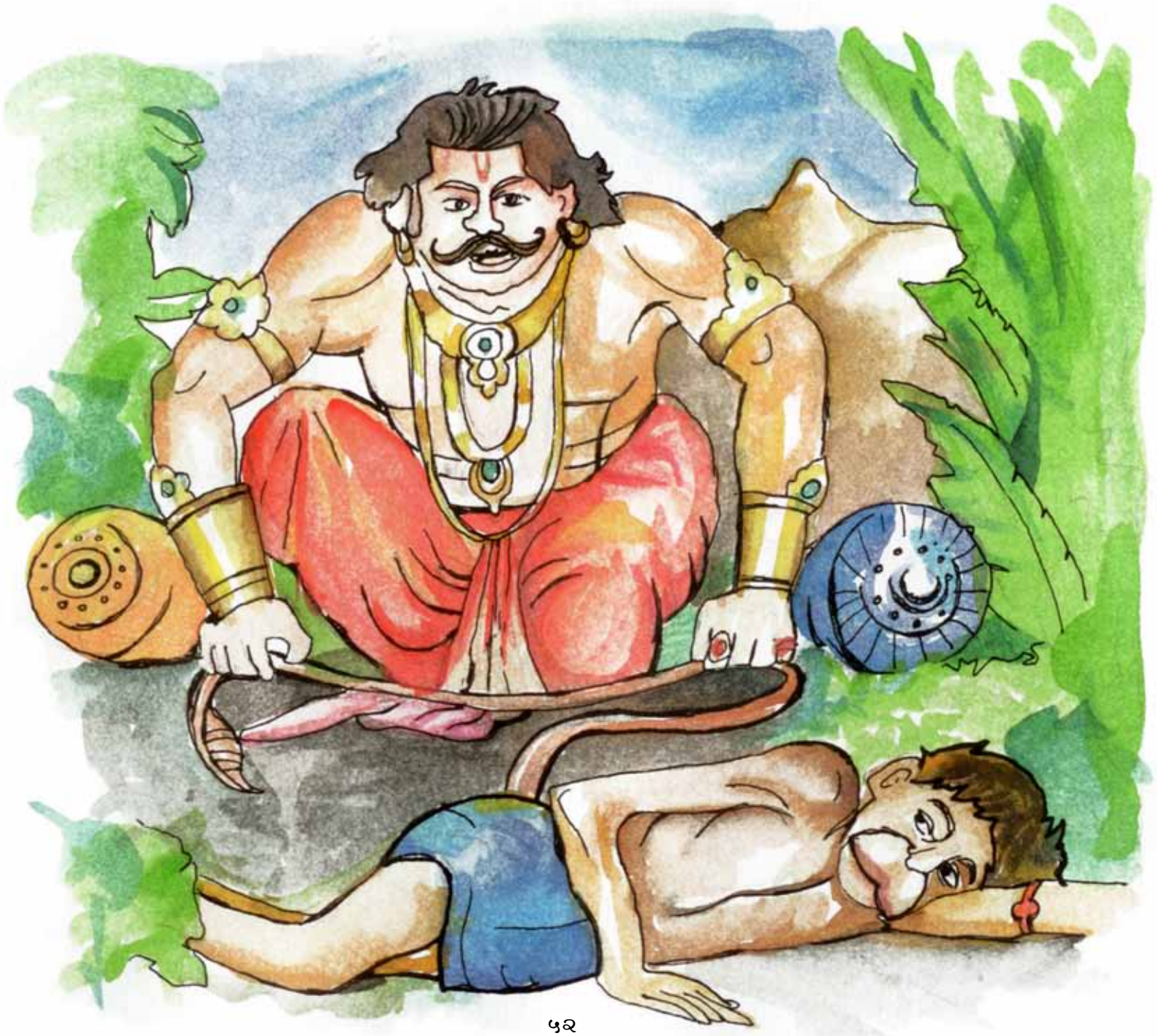

दो पर्वतों के मध्य, नदी के सँकरे रास्ते में एक बन्दर लेटा था। उसने पूँछ फैलाकर मार्ग अवरुद्ध कर रखा था। भीम ने उससे पूँछ समेटने को कहा। वह बोला, "भैया! तबियत खराब है, उठ नहीं सकूँगा। या तो लाँघकर निकल जायँ या पूँछ ही एक ओर कर दें।" भीम ने सोचा, इसे बायें हाथ से उठाकर पहाड़ के उस पार फेंक दूँ; किन्तु पूँछ हिली भी नहीं। अब उन्होंने दायाँ हाथ, पुनः दोनों हाथ और सारा बल लगा दिया। पसीने से तर हो गये, फिर भी पूँछ नहीं उठी तो हाथ जोड़कर बैठ गये, "भगवन्! आप कौन हैं? बन्दर तो आप हो ही नहीं सकते। कृपया परिचय दें।"

बन्दर ने कहा, "मैं पवनपुत्र हनुमान!" भीम ने कहा, "मैं वायुपुत्र भीम!" एक ही पिता के दोनों पुत्र! छोटा भाई बड़े भाई की पूँछ तक नहीं उठा पाया; क्योंकि हनुमानजी थे अखण्ड बाल ब्रह्मचारी, जबकि भीम के सामने थी गृहस्थी।

ब्रह्मचर्य में असीम शक्ति है। सृष्टि में सर्वोपरि बल ब्रह्मचर्य बल है। प्रत्येक बालक-बालिकाओं में इन्द्रियों का संयम पक्का होना चाहिये। मन के विचारों की शुद्धता से ही इसमें सफलता मिलती है। 'गीता' पढ़ने से मन के विचार शुद्ध होते हैं।

दूसरा दृष्टान्त–

भीष्म पितामह अखण्ड बाल ब्रह्मचारी थे। इस व्रत की रक्षा के लिये उन्होंने अपने शिक्षा-गुरु श्री परशुराम जी के निर्देश "काशिराज की कन्या अम्बा से विवाह कर लो।" को भी स्वीकार नहीं किया। रुष्ट परशुरामजी बोले, "मुझसे युद्ध कर!" भीष्म ने चरण छुए, युद्ध किया और उन्हें परास्त कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। महाभारत संग्राम में लगभग पौने तीन अरब योद्धाओं ने युद्ध किया, इतने ही योद्धा और थे, वे भी लड़े; किन्तु कोई भी भीष्म पितामह के टक्कर का नहीं था।

ईश्वरीय पथ पर चलनेवालों का सारा बल ब्रह्मचर्य ही हुआ करता है। विद्यार्थियों का भी बल ब्रह्मचर्य है और उनका शिक्षाकाल ही ब्रह्मचर्य आश्रम है, इसके बाद गृहस्थ आश्रम (वैवाहिक जीवन) तो है ही। ब्रह्मचर्य व्रत पालन में दृढ़ता के लिये एक परमात्मा का स्मरण और ॐ का जप सुबह-शाम अवश्य करना चाहिये।

* * *

प्रेरक प्रसंग – ४

धर्म ही सफलता की कुंजी है।

जीवन एक संग्राम है। इसमें वही सुरक्षित है, अवध्य है और विजयी होता है जो धर्म पर आरूढ़ है, एक परमात्मा की शरण में है। धर्मपरायण मनुष्य हमेशा भगवान् के वरदहस्त के नीचे है। धर्म ही उसका बल होता है। पाण्डवों पर जब-जब संकट आया, धर्मराज युधिष्ठिर ने सबको बचा लिया।

कथानक है – वनवासकाल काल में प्यासे पाण्डव एक यक्षरक्षित जलाशय से यक्ष के प्रश्नों का उत्तर न देकर हठपूर्वक जल लेना चाहा। क्रमशः चारो भाई अचेत होते चले गये। अन्त में धर्मराज युधिष्ठिर पहुँचे और यक्ष के चारो प्रश्नों का उत्तर देकर चारों भाइयों को जीवित कराया।

यक्ष-प्रश्न और धर्मराज युधिष्ठिर के उत्तर

प्रथम प्रश्न – **को मोदते?** – सुखी कौन है?

उत्तर – सुखी वही है जो समाधि में स्थित है। अर्थात् जो परमात्मा में लीन है, वही सहज सुख को प्राप्त है।

द्वितीय प्रश्न– **किं आश्चर्यम्?**– संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है?

उत्तर – प्रतिदिन लोगों की मौत देखकर भी जिन्दा लोग अपने को अमर मानते हैं। बचा कैसे जाय?– यह जानने का प्रयत्न नहीं करते! इससे बड़ा आश्चर्य और क्या हो सकता है?

तृतीय प्रश्न – **कः पन्था?**– यथार्थ मार्ग कौन है?

उत्तर – महापुरुष अर्थात् भगवान् के अन्तरंग भक्त जिस विधि-विधान से चले, वही यथार्थ मार्ग है।

चतुर्थ प्रश्न – **का च वार्तिका?**– यथार्थ वार्त्ता क्या है?

उत्तर – अध्यात्म वार्त्ता! जो परमतत्त्व परमात्मा या आत्मा का आधिपत्य दिला दे, पथ प्रशस्त कर दे।

(बच्चो! ये सभी यक्ष-प्रश्न चिर प्राचीन के साथ-साथ चिर नवीन भी हैं। आज के भी हैं, हम सभी के हैं और होने भी चाहिए क्योंकि इनसे हमें प्रेरणा मिलती है।)

युधिष्ठिर के उत्तर से सन्तुष्ट और प्रसन्न यक्ष ने उनके किसी एक भाई को जीवित करने का प्रस्ताव किया। युधिष्ठिर ने कहा, "मेरी दो माताएँ हैं। माता कुन्ती का एक पुत्र मैं जीवित हूँ, अतः माता माद्री का भी एक पुत्र जीवित रहना चाहिये। भ्राता नकुल को जीवन दे दें!"

युधिष्ठिर की न्यायप्रियता को देख यक्ष ने सभी भाइयों को जीवित कर दिया और युधिष्ठिर की प्रार्थना पर प्रकट होकर अपना परिचय दिया, "मैं तुम्हारा पिता 'धर्म' हूँ। वत्स! तुम्हें देखने आया था कि तुम धर्म पर आरूढ़ हो कि नहीं। तुम्हारी धर्मपरायणता से मुझे प्रसन्नता हुई।"

आजकल के पिता अपने अध्ययनरत बच्चों को देखने टॉफी लेकर जाते हैं, कोई मम्मी के हाथ की पूरियाँ लेकर जाते हैं। किन्तु हमारे पूर्वज अपने सन्तानों की कड़ी परीक्षाएँ लेते थे। धर्म के बल से ही महाराजा युधिष्ठिर अपने सभी भाइयों की समय-समय पर रक्षा करते रहे।

* * *

प्रेरक प्रसंग – ५

भगवान् के संरक्षण में सबकुछ प्राप्त होता है।

युद्ध अपरिहार्य हो गया था। कौरव और पाण्डव दोनों पक्ष आगामी युद्ध की तैयारी में लग गये। अर्जुन और दुर्योधन श्रीकृष्ण से युद्ध में सहायता माँगने गये। दुर्योधन ने पूछा, "केशव! इस युद्ध में आप किसकी ओर रहेंगे?" श्रीकृष्ण ने कहा, "मैं समदर्शी हूँ। सृष्टि में मेरा न कोई मित्र है और न कोई शत्रु ही है। मेरे पास जो पहले आयेगा, मैं उसकी ओर रहूँगा।"

शकुनि ने सुना तो बोला, "भांजे दुर्योधन! काम तो बन गया। अर्जुन प्रातः स्नान-ध्यान करेगा। उसे भक्ति कर लेने दे। तू राती-रात भाग। वहाँ पहले पहुँच। यदि हम कृष्ण को फोड़ लेते हैं तो पाण्डवों के पास बचेगा क्या?" दुर्योधन चल पड़ा।

भगवान् ने देखा, वह उद्दण्ड चला आ रहा है। है बड़ा मूर्ख! वह अपने बैठने का स्थान ढूँढ़ेगा। एक स्वर्णिम सिंहासन सिरहाने रखवा भगवान् प्रगाढ़ निद्रा में सो गये। दुर्योधन आया। वह अपने पहले आने से प्रसन्न था। कमर पर हाथ रखकर खड़ा रहा। बैठने के लिये दृष्टि दौड़ाया तो सिंहासन पर नजर पड़ी। सोचा, वाह! लगता है यह व्यवस्था मेरे लिये हुई है।

कुछ भी हो, ये यदुवंशी अतिथि-सत्कार करना जानते हैं। वह अँकड़कर बैठ गया।

कुछ देर पश्चात् अर्जुन भी पहुँचे। उसे पहले या पीछे पहुँचने की चिन्ता ही न थी। उसने भगवान् के चरणों में सादर प्रणाम किया और फर्श पर ही बैठ गया। वह प्रभु के उठने की प्रतीक्षा करता रहा। हाथ जोड़कर मुखारविन्दु का दर्शन करता रहा।

भगवान् की आँख खुली, बोले, "अर्जुन! कब आये?" अर्जुन कुछ कहता, उससे पूर्व ही दुर्योधन बोल पड़ा, "पहले मैं आया हूँ।" भगवान् ने घूमकर देखा और बोले, "भाई! तुम पहले आये अवश्य; किन्तु मेरी दृष्टि पहले अर्जुन पर पड़ी है। आना तब माना जाता है जब आमना-सामना हो। ओट में पता नहीं कौन बैठा है, क्या-क्या पड़ा है?" दुर्योधन घबड़ाया, इसमें कोई चाल तो नहीं, श्रीकृष्ण का आशय क्या है?

भगवान् ने कहा, "दुर्योधन! चिन्ता न करो। मेरे पास दो विकल्प हैं। एक तो यदुवंशियों की अजेय नारायणी सेना और दूसरी ओर अकेला मैं; किन्तु युद्ध नहीं करूँगा, शस्त्र नहीं उठाऊँगा। तुम दोनों एक-एक विकल्प चुन लो।" दुर्योधन ने कहा, "केशव! मैं पहले आया हूँ अतः मैं ही पहले माँगूँगा।" श्रीकृष्ण ने कहा, "ठीक है! तुम मुझे माँग लो।" दुर्योधन बिगड़ा, "फिर धोखाधड़ी! जब शस्त्र नहीं उठाना है, युद्ध नहीं करना है तो क्या मुझे बांसुरी बजवाकर ता-ता-थैया करवाना है? हमें अपनी नारायणी सेना दीजिये।" श्रीकृष्ण ने कहा, "एवमस्तु!" दुर्योधन विशाल नारायणी सेना के मध्य खड़ा हुआ, हर्ष से बोल पड़ा, "विजय तो हो गयी! अर्जुन और श्रीकृष्ण की ओर देखा! अब ग्वाले के पास बचा ही क्या? बजाया करो बांसुरी और दिया करो उपदेश।" वह प्रसन्न होकर चला गया।

इधर घूमकर भगवान् ने अर्जुन की ओर देखा। बोले, "अर्जुन! तुम?" अर्जुन ने कहा, "भगवन्! पहला अवसर मुझे मिलता तब भी मैं आप ही को माँगता। गोविन्द! मेरी प्रबल इच्छा है कि आपका वरदहस्त सदा मेरे सिर पर रहे। जैसा आप निर्देश देते रहेंगे, युद्ध करता रहूँगा। मुझे नारायणी सेना नहीं चाहिए! केवल आप चाहिये!"

ठीक अठारहवें दिन नारायणी सेना का कहीं पता नहीं रहा। ग्यारह अक्षौहिणी सेना के अधिपति दुर्योधन की जाँघें टूट गयी थीं। वह रणक्षेत्र में असहाय अकेला पड़ा था। उसकी आँत खींचने के लिये गिद्ध-सियार आगे-पीछे मँडरा रहे थे। आजन्म झूठ-सच, छल-छद्म, तीन तिकड़म और मामा शकुनि की राजनीति से उसने जितना संग्रह किया था, सब पाण्डवों को बरबस/अनायास मिल गया।

अतः कदाचित् भगवान् से माँगना भी पड़े तो वस्तु न माँगें, ऐश्वर्य न माँगें, भगवान् को ही माँग लें। भगवान् जहाँ रहते हैं, वहीं भगवत्ता रहती है। भगवान् अविनाशी हैं, अतः अविनाशी पद रहता है। वह सर्वज्ञ हैं, अतः सर्वज्ञता रहती है। भगवान् जब अपनाते हैं तो अपनी भगवत्ता ही प्रदान कर देते हैं।

* * *

'यथार्थ गीता' के प्रणेता

सद्गुरु स्वामी श्री अड़गड़ानन्द जी महाराज

'यथार्थ गीता' के प्रणेता एक परमात्मस्थित महापुरुष हैं। आपकी शैक्षिक उपाधियाँ तो कोई भी नहीं हैं; लेकिन सद्गुरु कृपा से पूर्णत्व प्राप्त कर मानवमात्र के कल्याण में रत हैं– 'सर्वभूतहिते रतः'। लेखन को आप साधना-भजन में व्यवधान मानते रहे किन्तु श्रीमद्भगवद्गीता भाष्य 'यथार्थ गीता' के प्रणयन में ईश्वरीय निर्देशन ही निमित्त बना।

भगवान् ने आपको अनुभव में बताया कि आपकी सारी वृत्तियाँ शान्त हो चुकी हैं, केवल एक छोटी-सी वृत्ति शेष है– गीता-ज्ञान के आशय का यथावत् पुनर्प्रकाशन! पहले तो आपने इस वृत्ति को भजन से काटने का प्रयास किया; किन्तु भगवान् के आदेशों का मूर्त्त स्वरूप है– 'यथार्थ गीता'।

'यथार्थ गीता' के रचनाकाल में भाष्य में जहाँ भी त्रुटि होती, भगवान् उसे सुधार देते थे। पूज्यश्री की 'स्वान्तःसुखाय' यह कालजयी कृति 'सर्वान्तःसुखाय' हो चली है। यह सिर्फ आर्यावर्त भारत ही नहीं, विश्व के मानवमात्र के कल्याण में रत है, संलग्न है।

'यथार्थ गीता' के आलोक में आप भी प्रकाशित हों!

* * *

'यथार्थ गीता' से–

कर्म

*** कर्म को समझ लेना,**
गीता को समझने की कुंजी है। *

पूरी गीता में श्रीकृष्ण ने कर्म को नियत कर्म, तदर्थ कर्म, कार्यम् कर्म, यज्ञार्थ कर्म, कर्तव्य कर्म, पुण्य कर्म आदि सम्बोधनों से बताया है। जिसका शुद्ध अर्थ है– आराधना क्रिया।

श्रीभगवानुवाच

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः।। (गीता, ३/८)

अर्जुन! तू नियत कर्म अर्थात् निर्धारित किये हुए कर्म को कर। वैसे कर्म तो बहुत से हैं, उनमें से कोई एक चुना हुआ है उसी नियत कर्म को कर। इससे तेरी शरीर-यात्रा भी पूर्ण हो जायेगी अर्थात् शरीर-त्याग और शरीर धारण करने का क्रम समाप्त हो जायेगा, परमात्मा में निवास मिल जायेगा।

योगेश्वर श्रीकृष्ण अगले श्लोक में ही बताते हैं कि वह निर्धारित कर्म क्या है?

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः। (गीता, ३/९)

वह निर्धारित कर्म है 'यज्ञ' अर्थात् यज्ञ को क्रियान्वित करना ही 'कर्म' है। इस यज्ञ-कर्म के अलावा जो कुछ भी किया जाता है, वह इसी संसार का बन्धन है। कर्म का शुद्ध अर्थ है– आराधना या चिन्तन! गीता के अनुसार एक परमात्मा या इष्ट का नियत विधि से ध्यान-पूजन-भजन!

'कर्म' और 'यज्ञ' की पूर्ण जानकारी के लिये पढ़ें 'यथार्थ गीता', अध्याय ३ व ४।

यज्ञ

*** आराधना, चिन्तन की विधि-विशेष का नाम यज्ञ है। ***

भगवान् श्रीकृष्ण ने 'गीता' के अध्याय चार में तेरह-चौदह तरीके से यज्ञ का वर्णन किया है। सभी मिलकर परमात्मा में प्रवेश दिलाते हैं। ये सभी यज्ञ श्वास से, ध्यान से, भजन-चिन्तन से और इन्द्रियों के संयम से ही सिद्ध होते हैं।

- यज्ञ की पूर्णता पर ही परमात्मा का दर्शन और उसकी प्राप्ति होती है।
- इस निर्धारित यज्ञ को कार्यरूप देना ही कर्म है।
- कर्म का शुद्ध अर्थ है 'आराधना'।

———

वर्ण

'वर्ण' एक यौगिक शब्द है, आदिशास्त्र गीता का शब्द है, साधना की श्रेणी का द्योतक है। कालान्तर में सामाजिक व्यवस्थाकारों ने वर्ण के नाम पर भारत में चार जातियों का समूह बना दिया और उसकी सत्यता भी गीता से सिद्ध करते हैं, जो कि पूर्णतया भ्रामक है, गलत है। आइये! वर्ण को समझा जाय–

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः। (गीता, ४/१३)

अर्जुन! चार वर्णों की रचना मैंने की है। मनुष्यों को नहीं बल्कि उनके गुणों की योग्यता के आधार पर नियत कर्म– आराधना को चार वर्णों, श्रेणियों या सोपानों में बाँटा है– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ये वर्ण एक ही साधक की ऊँची-नीची अवस्थाएँ हैं। एक ही साधक शूद्र श्रेणी से उन्नति करते हुए वैश्य, फिर क्षत्रिय और अन्त में ब्राह्मण श्रेणी को प्राप्त होता है। इससे उन्नत होने पर वह ब्राह्मण भी नहीं रह जाता, परमात्मा ही शेष रहता है।

अतः विद्यार्थियों से अपेक्षा है कि वर्तमान सामाजिक जाति-व्यवस्था की खाई को पाटते हुए अपने सभी सहपाठी और मित्रों के साथ समान व्यवहार करेंगे। समरस समाज की स्थापना करेंगे।

* * *

'यथार्थ गीता' से–

वह सर्वसमर्थ, सदा रहनेवाला परमात्मा मानव के हृदय में स्थित है। सम्पूर्ण भावों से उसकी शरण में जाने का विधान है, जिससे शाश्वत धाम, सदा रहनेवाली शान्ति तथा अनन्त जीवन की प्राप्ति होती है।

कक्षा ७ से १० तक के सभी विद्यार्थीगण जिन्होंने बाल गीता का अध्ययन किया है उनमें पूरी गीता जानने की उत्कण्ठा और समझने की क्षमता होती है।

विश्वबंधुत्व, शांती एवम् समृद्धि के लिए कक्षा ११-१२ और उन्नत कक्षाओं में श्रीमद्भगवद्गीता भाष्य 'यथार्थ गीता' का अनुशीलन श्रेयस्कर है।

।। सर्वभूतहिते रतः ।।

।। योगक्षेमं वहाम्यहम् ।।

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।। गीता, ४/११

हे पार्थ! जो मुझे जितनी लगन से जैसा भजते हैं, मैं भी उनको वैसा ही भजता हूँ। वे महापुरुष रथी बनकर खड़े हो जाते हैं, मार्ग दर्शन करने लगते हैं। यही उनका भजना हैं। इस रहस्य को जानकर सुधीजन,श्रद्धालु सम्पूर्ण भाव से,पूर्ण समर्पण के साथ मेरे मार्ग के अनुसार बरतते हैं, चलते हैं।

श्री परमहंस स्वामी अड़गड़ानन्दजी आश्रम ट्रस्ट

5, New Apollo Estate, Mogra Lane, Opp. Nagardas Road, Andheri (East), Mumbai – 400069 India

Telephone : (022) 2825300

ई-मेल - contact@yatharthgeeta.com

वेबसाइट - www.yatharthgeeta.com